

तुलसीदासकृत रामायणकी मानसदीपिका

मिश्रईश्वरकविकृत

जिसको

अवधसमाचार पत्रके सम्पादक श्रीयुत मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने सब जिज्ञासुओं के सुगमतापूर्वक बोधके निमित्त अपने अच्छे२ पण्डितों के द्वारा बहुतसी प्रतियों से अत्यन्त शुद्धकराया

दूसरीवार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
अप्रिल सन १८९४ ई० ॥

इस छापेखाने में जितनी प्रकारकी रामायण छपी हैं उनमेंसे कुछ इसमें लिखी हैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामी तुलसीदासजी की काव्य भारतवर्ष है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इसलोकमें जीवन्मुक्त होकर अन्त मुक्तिपातेहैं और इसके कोई पाठशालाओं में भी पढ़ायेजातेहैं और यह पुस्तक हरएक घरमें होनी चाहिये और बहुतसे छापेखानों में यह पुस्तक लाखों प्रति छपी है इस छापेखाने में बहुत से रूपों में यह पुस्तक छपीहै सो नीचे लिखेके अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की ॥

बहुत मोटे अक्षरोंमें है जिसको बालक और वृद्ध सुगमतासे पढ़सक्ते हैं इतने मोटे अक्षरोंकी आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपक समेत है ॥

रामायण मूल तुलसीकृत ॥

जो बहुतसी प्रतियोंसे शुद्धकीगई कोई दोहा चौपाई रहने नहींपाई और इसके काण्ड अलग अलगभी मिलतेहैं ॥

रामायण मूल तुलसीकृत, छोटी ॥

इसमें नवीन रीतिसे सूचीपत्र सहित चित्रोंका रूपक बांधकर आदि में सम्पूर्ण रामायणका सारांश दिखलाया गयाहै वह आदिमें लगाहै ऐसी रचना आजतक किसी दूसरी रामायणोंमें नहीं देखीगई अवलोकन करतेही पाठक आनन्द समुद्रमें डूबजावेंगे ॥

रामायण तु० टी० रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा ।

इस विस्तृत टीकाको अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकार ने निज देश भाषा में करके रामायणको ऐसा सुगम करदिया कि जो थोड़ीभी विद्या रखतेहों वे रामायणका पूर्ण आशय समझजावें और गूढ़ार्थोंके समझाने और भक्तिपक्षके बढ़ाने के लिये श्रुतिपुराण और अन्य आचार्योंके श्लोकोंसे विभूषित करके अति सुन्दर मनोहर बना दिया कोई सन्देह नहीं तुलसीकृत रामायणकी पुस्तकमें इस टीकाके तुल्य न

टीका मानसदीपिका रामायण के साथ
संपूरणता ग्रन्थ की गौरी सुत के हाथ १॥

रामायणसटीक



मुन्शी नवलकिशोर सी. आई. ई. के छापेखाने लखनऊ माह मई सन् १८९४ ई. में छापी गई.



मानसदीपिकारामायणटीका ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ श्रीसीताराम परमभक्त गोस्वामी तुलसीदास कृतस्य श्रीमत् भाषारामायणस्य मानस दीपिका समाख्याया टीकायां भूमिका लिख्यते । तत्रादौ मंगलाचरणं दोहा ॥ परशुधरन संपतिभरन अवटरटरन गनेश । विघनहरन मंगलकरन राखहु शरन हमेश १ एकरदन करिवर बदन सिद्धिसदन मुददानि । मदन कदन नंदन जपहु जगवंदन जिय जानि २ सिंदुर सहसिंधुरवदन रदन विशद द्युतिभाति । ईश्वरकवि फबिवो निरखि रबि पबि छबि दबिजाति ३ अथ संक्षेपतो राजवंश वर्णनं । हरिपदछंद । परमतपस्वी तेजस्वी वरखिड़ू मिश्र उजागर । हुतेवेद विद वन्दनीय शुभ सत्यसुयशके सागर ४ गौतम गोत्र सुपात्र पेखि पदपंकजपै शिरधरकै । दये ग्राम बसुबिंशति जिनको नृपवनार छलकरिकै ५ क्यों छल कियो कौनथल कैसे कौन लह्योफल भारी । बहुरि मिश्रजूको प्रभाव अरु वंशावली सुखारी ६ यहसबकथा कहांलगि कहिये सुनहुसुजनसुखदानी । काशिराजचन्द्रिका ग्रंथ में सह विस्तार बखानी ७ यहप्रसंग बसकहां कहौं ते बंशावली अदूषित । जाहिरहै जगमें विशेष जेहि कियोबंश निजभूषित ८ विड़ूमिश्र मुनीश्वरजूके बंशमाहिंप्रगटेहैं । महाराज बरबंड सिंह जिनप्रबल प्रतीयठटेहैं ९ बनेठनेपरगने छानबेगनेघनें मनभाये । तिन्हैंराखि निजशरण शत्रुहति काशीराज कहाये १० कहौंसत्य सुनबेकों सतजन सावधान मन हूजो । नृपबरि वंडसमान जगतमें नृपवरिवंडनदूजो ११ तासुधर्म अरु राज दुहूंको अधिकारी सुत सुन्दर । नृप्रमहीप नारायण प्रगटे प्रोद्धत पुहुमि पुरंदर १२ तिनकेसुतभे तीनतीनिहूं सबप्रकार सबलायक । जिहकोयश जहान मेंजाहिर गानकरत गुनगायक १३ तिन्हमें ज्येष्ठ श्रेष्ठ काशीपति नृपति उदितनारायण । तदनुदीपनारायण बाबूपरमपुण्यपारायण १४ तदनुप्रसिद्ध जगतमें बाबू श्रीप्रसिद्धनारायण । दान देतहरि ध्यान धरत गुणगान करत रामायण १५ अथातिसंक्षेप क्रमेण राज श्रीराजधानी राजसभा वर्णनम् ॥ दोहा ॥ श्रीकाशीपति नृपतिकीअतिराजत श्रीभाति । रचितराजधानीरुचिर सुखदानीसरसाति १६ सभाभूरि शोभाभरीभूषितप्रभाविभाति । निजकररची

विरं[illegible] रंच [illegible]णीजांति १७ अथमुख्य प्रसंगवर्णन हरिगीतिकाछंद । तिहिसभावरबिचराजगादी सत्यबादी भ्राजते । नृपउदितनारायणरहेमन मुदित नित्य विराजते ॥ अतिसुमति प्रबल प्रताप सुयश कलाप गुणगण धामते ॥ जगमें उजागर शीलसागर रूपआगर कामसे१८ सदबंधु शोभा सिंधु बैठे एक दिन दिनमें रहे। जनु धर्मराज सभीम अर्जुन पेखि छबि सबहीकहे ॥ तहँ दासतुलसीरचित रामायम कथाके अर्थको। चलि भो प्रसंग सुढंग भावै सर्ब अंग समर्थको १६ इहिहेत अंग समेत टीको नि-पट नीकोईबनै । जिहिजगत सनमानै सुधीशकबीशवृंद भलोभनै ॥ सुनि सभासदभेकण्ठ गदगदगिरासुखप्रदमुदमई । कहिजयति काशीराज आज अनूप यह आज्ञाभई २० चौपाई॥ बाबू श्रीप्रसिद्ध नारायण। भूसुर भक्त पुण्य पारायण ॥ कबिकोविदहि महदमुददायक। भूपबन्धु सब बिधि सब लायक २१ भूपतिकी आज्ञाअतिभारी। अद्भुत अमित जगतहितकारी ॥ सुनतश्रवण निजशिरपरधारी । समुझिसुखद सुरतरुकी डारी २२ क्योंकि तिलक द्वैनृप विरचाये। जे अतिअद्भुत जगतकहाये ॥ पहलोतिलक राम लीलावर। जिहि लखिपरत न तिमिर कुपनर २३ सोरठादि दोहा समु-दाई । छन्दअमन्द चारु चौपाई ॥ जाकोजहां अर्थहैजैसो। लीला ललित लखावति तैसो २४ दूजो तिलक सकल मन भायो । रामायण सहचित्र लिखायो ॥ मूर्तिवन्तजनु अर्थविराजै । जिहिलखि अर्थकथन लजिभाजै २५ यद्यपि तिलक दिव्य ये दोऊ। अति प्रसन्न इनतें सबकोऊ॥ तदपि सकल पुरनगर निवासी। जेहैं रामायण अभ्यासी २६ तिन्हैं न सुलभ सुलभहू जिनको। सोउनसदा न सब्रथलतिनको ॥ तातें सुलभ सदाअरु सब थल। तीजो तिलकवर्णमय अति भल २७ बनै भूप यह आज्ञाकी-न्हीं। बांछितअति संपतिजनुदीन्हीं॥ इहितेसमुझिकामतरुडारी। नृपति अनुज निज शिरपर धारी २८ तब निज भक्ति समेत अनुज कहँ। पेखि भयेनृप प्रमुदितमनमहँ ॥ षट्पदी॥ प्रमुदित ह्वै नृपनीतिरीति सतप्रीति भक्तिहित । दानसबुधि सनमान ज्ञान भगवान ध्याननित ॥ रागरंगसत संग अंगयुत अति अभंगतहँ । परमधर्मलगि यज्ञकरत सर्बज्ञ नृपतिकहँ ॥ बहुवर्ष अमल उत्कर्ष अति हर्ष सहित बीततभये। लखि नेमक्षेम प्रदप्रेम निज पूर्णतूर्ण रघुपतिदये २९ दोहा। काशिराज नृपराजतव मनमेंकियो विचार। सबप्रकारसामर्थ्ययुत अबयहभयोकुमार ३० वयलघुअलघुप्रताप

अति सुयशवंत गंभीर । शील सिंधु शोभा उदधि धर्म धुरंधर धीर ३१ दयावन्त दानीबड़ो सतगुणवन्तसुजान । अस्त्रशस्त्रमें विज्ञतरवरकृतज्ञबल वान ३२ बहुविधि विद्यानिधिविविध बुद्धिसमृद्धि निधान । सतसंगति रति समुझि अति नरपति मुदित महान ३३ नेहहिकरि हरिचरण ते देहहि पराखि अनित्य । सुतहि तुरत युवराजके भूप भये कृतकृत्य ३४ षट्पदी ॥ तदनन्तर शुभकरन सुमरि गुरुचरन चारुतर । सुनत दीह दुख दरनग्रन्थगीतादि मुक्तिकर ॥ सकलसुबुध सनमानसाधु गुणगानज्ञानरत । करत दान हरि ध्यानधरत नहिं आन आचरत ॥ कीते सुवर्ष बीते जबहिं तब प्रकर्ष हर्षहि लह्यो । है प्राप्त कार्म निजनाम करि परमधाम जैबो चह्यो ३५ चौपाई ॥ अष्टादशशतद्विनवति १८९२ संबत्अतिपुनीत रवि सौम्य गोलगति ॥ चैत्रशुक्लषष्ठी शनिवासर । मध्यदिवसलहि समय शुद्ध तर ३६ कवित्त ॥ लक्षन मँगायकरि परम सुलक्षणकी गाय वरवच्छनकी पूरणपननिसों । केसकैंबखानि अलकेशकीसी संपतहू काशिकेश उद्दितदै बेदकीभननिसों ॥ काशीमाहिं बैठ कमलासन कुशासनपै इवासन सबेटि कै समाधिकी बननिसों । सत्यसंधयशके प्रबन्धसुनि ह्वैकै मगब्रह्मरंध्रतिन छोडि छूटे बंधननिसों ३७ चौपाई ॥ तब युवराजसमय लखि शुभतर । राज तिलक लहि सुख सुखमाकर ॥ साजसकाय सत्यवादीबर । बैठे राज राजगाद्दीपर ३८ कवित्त ॥ बैठे राज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह दीपतिदराज शुभसाज सजेतनहैं । बैरीगन ओजनसों हीन बिन फौजनह्वै भोजन बिहाय बेगि भाजे बनबनहैं ॥ राजे कबिकोबिद समूह यश साजे तिन बाजे बजे छाजे प्रजावृंद छन छन हैं । आये जेपगन शीश जिन के नगनपायमांगे धनगन ह्वैगे मगनमगनहैं ३९ दोहा ॥ तब मंगनगन मगनह्वै मोदैंपाय विशेष । कियोंगोननिज भौनप्रतिदै आशिषा अशेष ४० आशिषा यथा कवित्त ॥ राजू भूप ईश्वरीप्रसाद नारायन सिंह रावरे प्रतापनकी पंगति भगीरहै । तंतकरि दशहू दिगंतर परियन्त सचीकन्त सी सुकीरति अनन्त उमगी रहै ॥ ईश्वर बिरजिराजकाज में परमक्षेम नेमसों निबाहैं नीति प्रेमसों पगी रहैं । काशिराज संयुत समाज जीवौ युगयुग जासों जगजीवनकी जीविकाजगीरहै ४१ दोहा ॥ विद्यमान मनुजें द्रकहं जब समेत नृप नीति । राजकरति अतिहर्षसोंकिते वर्षगेबीति ४२ हरि गीतिका छंद ॥ तब परम धाम निवास कारी काशिराज नरेश

शकी । जुविशेष आज्ञा शीशधारी ध्याय मूर्त्ति महेशकी ॥ गुनिभूप बंधु सुजान शोभासिंधु सोई कहतभे । बर विद्यमान नरेश काशिराज सुनि सुख लहतभे ४३ अवधेश भक्त सुव्यक्तविद्या युक्त सतगुन संचई । रघु-नाथदास बुधेंद्रपै मनुजेंद्रकी आज्ञाभई ॥ तिनदास तुलसी रचित रामायणसुटीका निर्मई । धरिनाम मानसदीपिका सब दीपजो दीपितभई ४४ दोहा ॥ मुद्रित मुद्राअक्षरनि लुञ्छन स्वच्छ समेत । दक्षनहेत समक्ष जनु अक्षय गिरा निकेत ४५ सोरठा ॥ ईश्वरकवि कविराय भूरिभव्य हय भूमिका । विरची आज्ञापाय विद्यमान मनजेंद्रकी ४६ ॥

इस्वस्तिश्रीकाशिराज महाराजाधिराज श्रीईश्वरीप्रसाद नारायणसिंहस्याज्ञानुगामिना काशिबासि मिश्रोपनामकेन ईश्वराख्येन कविना विरचिता गोस्वामी तुलसीदासकृत श्रीमद्भाषा रामायणस्य मानसदीपिकासमाख्याया टीकाया भूमिकासम्पूर्णम् ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ गणपति सियपति गौरिपतिं गौरिप्रभापति पाय । वंदौवंदनजगतके चंदनलौंसुखदाय १ दुरितदोष दूषन दलन जासु नाम भवसेतु । ताहिसुमिर टीका रचित काशिराज मुदहेतु २ यासभा में विचारभयो पंडित अरु कविनसों श्री गोसाईंजी दासकृत रामायणग्रंथ बहुत विख्यातहै अरु याको तिलक बहुत महात्मोंने कियो है बाबा रामचरण दासजी अयोध्यासंत सिंहजी लाहौर राजागोपालशरण सिंह वकार अरु स्वामीजी महाराज वर्तमान काशी जे निजगुरू श्री विद्यारण्यतीर्थ स्वामीजी के नामते रामायण परिचर्या बनायो सो अति संक्षेपते सबकों ज्ञान नहीं होत ताकी आशय ख्यात कियो जाय अरु प्रथम उपोद्घातमें रामायणको द्वैप्रकारको संदेह बर्णन कियो चाहिये एक सत्यत्वमें दूसरो प्रसंगके भेदमों एक वाक्यतापूर्वक बूझेमों आवै अरु स्मृति श्रुति ग्रंथांतर को प्रमाण न लिख्योजाय हेतु कि या ग्रन्थको सब्कोऊ देखैगो यातें श्री गोसाईंजूके ग्रन्थनको प्रमाण दियोजाय अरु श्रीगोसाईं जी अरु औरहू महात्मोंको सम्मत यहीहो कि ज्ञानभक्ति संपुटमें नामरत्नया रामायणमें सिद्धांतहै औरहू रामायण विविध भांति प्रसिद्ध हैं रामायण सतकोटि अपारा अरु अर्थ विषै जो सरलरीति अक्षरपदनते प्राप्त सोई मुख्य सो छडग्राग्रही जो अर्थ नहीं है सो करि आपन अर्थ निकारतहैं ताहीते मत-नमों अब ऐसो विरोधहै कि जैसे एक बाक्यता सब देवतनके परत्व में

होतहै सोऊ व्याक्ति अव्याक्ति करकैभी मतनमें ख्यातहै कष्टते अरु यहि ग्रन्थमें अति आग्रह नाहीं राखत ताहेतुते याको सद्ग्रंथ मानत हैं अरु मतग्रन्थके आचार्य बड़े बड़े भये हैं वामें जो विचार कियोजाय तौ जा स्थानपर सिद्धांत करत हैं कि एहीअर्थ सत्यहै आग्रहसे जो सिद्धांत है सो रहिजात है सो पुरानादिकसों विरुद्ध भासत है परत्व सबपुराणमें भिन्नहै परंतु एकवाक्यता होइसकै है यथा मूलवारनसों अरजयही कि अपनेअपने इष्टनकोतुम व्यापकमानतहो कि नहीं उ० । व्यापक मानौ तो इष्टनमें कतहूं न वैर विरोध चही ॥ नहिं व्यापक वहतो वाहूमें जीव दशा आय रही १ का निर्गुणका सर्गुण मतमें रहिहै एकै बात सही । सार भाग सद हीको लीजै रसते तजिये छाछमही २ बूसीबाद सारनिज करनी बोलगये अस सारगही। बेद मंत्र दमड़ीके कारण जिन बेचोकरि दही दही ३ रोचित चेत न करै विचार । मतपर बिचारसार नहिं सोचो परउपकार ४ सो नव नीति विद्या दधि मथिं तजि वारि विकार मति मदिरा अति पान किये ते होत सुमत मतवार ५ सत विद्या सागर सम शीतल करनी करै सम्हार । सुहृद निकट हृदयस्थ त्यागिकत बाहर करत पुकार ६ ऐसोई जो बातें न कहीजाय वाको कहतहैं अरु न देखोजाय ताको देखतहैं तातें प्रथमपुराणन शास्त्रनके लक्षण सिद्धांत कछु दृष्टांत अरु द्वितीय वर्त्तमान कालमें राम गुलाम जू पंडितरहे सर्वशास्त्र अरु पुराण याही रामायणके दृष्टांतहेतु श्रम कियोरह्यो सों सर्व अर्थ बिस्तरभयतें न लिखोजायहै परन्तुअर्थ जो शब्दवत् अरु यावत्का व्यंग लक्षणा विंजनापूर्वक सहज निकरै सोई सद अर्थ है याहेतुतें कछु काव्यंगहू अरु तृतीय सर्वश्रेय भक्ति जो नाममूल है श्रीरा- मायणके तिलकको सरनी प्रसंगरीति करकै अरु याहीमें श्लोकनके अर्थ अरु नाम निरूपण मानस इत्यादि जहां जहां क्लिष्टहोय तहां तहां स्पष्ट अर्थ प्रसंगके अन्तरगत अरु चतुर्थ बहुतेजन यामें कहूंकहूं शंका करत हैं ताते कछु मुख्य मुख्य शंकाको समाधानं हूं अरु पञ्चम यावत यामें विषम विषम शब्दहैं ताको अर्थ मुख्य एककोश करिकै ये पांचों अंगयुक्त श्रीरामायणको तिलक लिख्यो ॥ इतिश्रीमानसदीपिकायांउपोद्घातव र्णनेप्रथमःप्रकाशः ॥ श्रीगोसाईंजी कह्यो है नानापुराण निगमागम इ- त्यादि तातें कछु पुराणादि अंग लिखतहैं। अथ प्रथम अंगदशलक्षण पुरा- णनके भागवतमें कह्यो है सर्ग १ विसर्ग २ स्थान ३ पोषण ४ ऊति ५

मन्वंतर ६ ईशान कथा ७ निरोध ८ मुक्ति ९ आश्रय १० प्रथम सर्ग लक्षण महाभूत आकाशादि तन्मात्रा पंचशब्दादि इन्द्री दशमहत्तत्त्व अहंकार ये सबको ब्रह्मसे गुण वैषम्य करिकै जो परिनाम वातें विराट् स्वरूप अरु स्वरूपकरिकै जो जन्मवाको नामसर्ग१ विराट्से जो भयो चराचरको जन्मसो विसर्ग २ भगवानके विजयपूर्वक सृष्टिको मर्यादा पालन करनेसे जो उत्कर्षसो स्थान ३ अपने भक्तके ऊपर अनुग्रह सो पोषण ४ कर्म्मनकी बासना अरु वर्णाश्रमरुपा सोऊति ५ अपने कालपर्यंत एकएक मनुसतधर्मको पालनकरतहैं सो मन्वंतर ६ ईश भगवानको जो अनुचरित सोई ईशानकथा अथवा ईश जो सूर्यचंद्र वंशके राजा उनकी जो कथा सोई ईशान कथा कहिये ७ दुष्टन को मारनो वाहिरकी योग निद्रा के शक्ति सहित जीवनका लय सो निरोध ८ आरोपित कर्तृत्वादि त्यागि कै शुद्ध ब्रह्म स्वरूपजो स्थिति सो मुक्ति ९ जगतकी उत्पति अरु विनाशजा तें ज्ञातहोतहैं सो आत्मापरब्रह्म सबही को आश्रय १० अरु अपर पुराण के जो पंचलक्षण कहे हैं सो याही दश लक्षणके अंतरगत हैं अरु ये दश पांचों के अन्तर्गत हैं सो पांचों सर्ग १ विसर्ग २ वंश ३ मन्वंतर ४ वंशानुचरित ५ इतिपुराण ॥ अथशास्त्र । षट् शास्त्रजो हैं वेद जनिबे को अंग ताको सिद्धांत बात कछु कछु पृथक् पृथक् लिखत हैं प्रथमतो मीमांसा शास्त्र याको आचार्य जैमिनिमुनियामें यज्ञादि धर्म्म विषय है अरु धर्म्म ज्ञानही प्रयोजन है फल उद्देशकरि वेद प्रतिपाद्य जो अर्थ सो धर्म कहिये स्वर्गरूप फलके हेतु यज्ञ करिके अपूर्वको भावना करनो अरु भावनामें तीन अंशकी अपेक्षा है कारण १ कार्य २ इति कर्तव्यता ३ कौनकार करनो या कारण अंशकीअपेक्षा है क्या करनो या कार्य अंशकी अपेक्षा है कौन प्रकारतें करनो या इति कर्तव्यता अंशकी अपेक्षाहै अरु भावना द्वै हैं एक आर्थी दूसरी शाब्दी अरु अपौरुषेय जो बाक्य सो वेदमेंवेद पांच प्रकारको है विधि १ मन्त्र २ नामधेय ३ अर्थवाद४ निषेध ५ भेदते सम्पूर्ण वेद जोहैंसोकोऊसाक्षाततें कोऊपरंपरातेंधर्मप्रतिपादकहैं विधिचारप्रकार की है उत्पति १ विनियोग २ अधिकार ३ प्रयोग ४ भेदतें अग्निहोत्र करनो उत्पति १ अंगको बोधक जो विधिसो विनियोग दधि करके होम करनो इहां विनियोगहै अंग द्वा हैं एक सिद्ध दूसरो साध्यदधि आदि सिद्धि प्रयाजादि साध्य २ कर्म जन्य फलबोधक जो विधि सो अधिकार ३

स्वर्ग फलके हेतु यज्ञ करनो यहां अंग को क्रमबोधक जो विधि सो प्रयो-ग ४ वेद संपादन करके वेदी करतहैं याके सहकारी भूतछः प्रमाण हैं श्रुति १ लिंग२ वाक्य३ प्रकरण४ स्थान५ समाख्या६ भेदतें निरपेक्ष जो शब्द सो श्रुति है १ सामते जो अर्थका बोधक होयसो लिंग २ एक अर्थ को बोधक होय बिभाग ते परस्पर आकांक्षा होय सो वाक्य ३ जहां दोऊ को आंकाक्षाहै सो प्रकरण४ जहां दोऊमें एककी आकांक्षा होयसो स्थान ५ समाख्या कही संकेत६ पुनः विधि तीन प्रकारकीहै अपूर्व १ नियम २ परिसंख्या ३ भेद ॥ अत्यंत अप्राप्त अर्थ की जो विधि सो अपूर्व १ अग्नि होत्र करनो इहां पक्षमों प्राप्त जो विधि नियम२ दधि करिकै होम करनो इहां स्वभावतें प्राप्तसंता पुन जोविधान सो परिसंख्या ३ पंच पंच नखा भक्षइति । प्रशंसा वाक्य जो है सो अर्थ वादहै १ सो तीन भांति गुण वाद १ अनुवाद २ सूतार्थ वाद ३ भेदतें ॥ प्रत्यक्षादि प्रमाणतें विरुद्ध सगुण बाद १ सूर्यरेव भाहै सो प्रत्यक्षादि प्रमाण तें ज्ञान जो अर्थ वाको बाधक जो सो अनुबाद २ वेतकी जल ते उत्पत्ति भूतका लिक अर्थ को प्रतिपादक जो सो भूतार्थवाद ३ इन्द्रदेवतन में श्रेष्ठतर है इति यज्ञकर्ता को जो संकेततद्विशिष्ठसो मन्त्र ४ यज्ञनको जो नाम सो नामधेय ५ इच्छातें अनिष्टमें प्रवृत्त पुरुषको निवृत्त करनो सो निषेध ५ कलंजको नखानो और उदय होते सूर्य को न देखनो इहां या रीतिसेमी मांसा परिशोधित तर्कते वेदके पांचो प्रकारको जानिकेयथोक्त कर्मके अनु ष्टान करके पुरुषको परमपुरुषार्थको लाभ होतहै १ अथद्वितीय वैशेषिक शास्त्र याको आचार्य कणादमुनि यामें पदार्थ विषयहै औ पदार्थ तत्वज्ञान प्रयोजनहै पदार्थ दोय एकभाव दूसरो अभाव भावछः हैं द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ विशेष ५ समवाय ६ येछः पदार्थके सामानधर्मअरु बिरुद्ध धर्म जानिबेते अनेक पदार्थोंके अनेक धर्मको ज्ञान होतहै अनेक धर्मोंमें एक निवृति धर्म है निवृति धर्मते उत्पन्न जो आत्मा साक्षात्कार ताते मोक्ष होतहै अभावचारहैं प्रागभाव १ प्रध्वंसा भाव २ अत्यन्ताभाव ३ अन्योन्याभाव ४ अरु द्रव्यत्व १ गुणत्व २ कर्मत्व ३ ईतीन जातिरूप धर्महैं सामान्यत्व १ विशेषत्व २ समवायत्व३ अभावत्व ४ ईचार उपाधि रूप धर्महैं पृथिवी १ जल २ तेज ३ वयु ४ आकाश ५ काल ६ दिशा७ आत्मा ८ मन ९ ईनव द्रव्य हैं अरु पृथिवीत्व १ जलत्व २ तेजत्व ३

वायत्व ४ आत्मत्व ५ मनस्त्व ६ ईछःजाति रूप धर्म हैं आकाशत्व १ कालत्व ८ दिशात्व ३ ईतीन उपाधिरूप धर्म हैं रूप १ रस २ गन्ध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमान ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ६ परत्व १० अपर्त्व ११ गुरुत्व १२ द्रव्यत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार २४ ईचौबीस गुणहैं और रूपत्वादिक चौबीसौं जातिरूप धर्म्म हैं पृथिवीमें रूप १ रस २ गन्ध ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १२ संस्कार १४ ईचौदह गुणहैं जलमें रूप १ रस २ स्नेह ३ स्पर्श ४ संख्या ५ परिमाण ६ पृथक्त्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व१०अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रवत्व १३ संस्कार १४ ईचौदह गुण हैं तेजमें रूप १ स्पर्श २ संख्या ३ परिमाण ४ पृथक्त्व ५ संयोग ६ विभाग ७ परत्व८अपरत्व ९ द्रवत्व १० संस्कार ११ ईग्यारह गुण हैं वायुमें स्पर्श१संख्या २ परिमाण ३ पृथक्त्व ४ संयोग ५ विभाग ६ परत्व ७ अपरत्व ८ संस्कार ९ ईनवगुण हैं आकाशमें शब्द १ संख्या २ परिमाण ३ पृथक्त ४ संयोग ५ विभाग ६ ईछः गुणहैं कालमें अरु दिशामें संख्या १ परिमाण २ पृथक्त ३ संयोग ४ विभाग ५ ईपांच गुणहैं जीवात्मामें संख्या१ परिमाण२पृथक्त्वें३ संयोग ४ विभाग ५ बुद्धि ६ सुख ७ दुःख ८ इच्छा ९ द्वेष १० प्रयत्न ११ धर्म्म १२ अधर्म १३ संस्कार १४ ईचौदह गुणहैं मनमें संख्या १ परिमाण २ पृथक्त्व ३ संयोग ४विभाग ५ परत्व ६ अपरत्व७संस्कार ८ ई आठगुण हैं ईश्वरमें ज्ञान १ इच्छा २ प्रयत्न ३ संख्या ४ परिमाण ५ पृथक्त ६ संयोग ७ विभाग ८ ई आठगुणहैं पृथ्वी१ जल २ वायु ३ तेज ४ ई चारों द्वैप्रकारके हैं एक परिमाणरूप दूसरो सावयव घ्राणकादि रूप अरु आकाश १ काल २ दिशा ३ आत्मा ४ ई चारों व्यापक रूप हैं मन अणुरूप सावयव अनित्य है बाकी सब नित्य हैं सावयवके तीनभेद हैं शरीर १ इन्द्रिय २ विषय ३ मृत्युलोकमों मिट्टीको शरीरहै वरुणलोकमों जलको सूर्यलोकमो तेजको वायुलोकमों वायुको अरु घ्राणइंद्री पृथिवीको रसना इन्द्रिय जलको चक्षु इन्द्रिय तेजको कर्ण इन्द्रिय आकाशको पृथ्वीमों सातोंरूप रहतहैं जलमों स्वच्छरूप तेजमों प्रकाशरूप अरु पृथ्वीमें छवों रस रहतहैं जलमों मधुरस रहत है अरु पृथ्वीमों दूनों गन्ध रहतुहैं कर्म्म

पांचहैं ऊर्ध्व क्रिया १ अधोक्रिया २ संकोच ३ विस्तार४ गमन ५ ईपांचों कर्म द्रव्यमों रहतहैं अरु सामान्यकहे जांति जाति तीनहैं व्याप्य १ व्यापक २ व्याप्य व्यापक ३ सत्ता जाति व्यापकहै द्रव्य गुण कर्म तीनोंमों रहत हैं घटत्व जाति व्याप्यहै द्रव्यत्व जाति व्याप्य व्यापक है नित्यहोय एकहोय अरु अनेकमों रहै सो जाति अरु नित्य द्रव्यमें रहै नित्य द्रव्य मों परस्पर भेदहै जाति सो विशेषहै. समवाय कहिये नित्य सम्बन्ध अरु कार्यके पूर्व जो अभाव प्रागभाव १ कार्यको जो नाश सो प्रध्वंसाभाव २ तीनोंकालमों जो अभाव सो अत्यंताभाव३परस्पर जो अभाव सो अन्योन्याभाव ४ अरु प्रमाण द्वैहैं प्रत्यक्ष१ अनुमान २ अरु शब्द औ उपमान ईदोऊ अनुमानमों गतार्थ हैं । इतितृतीयन्यायतर्कशास्त्र । याके आचार्य मुनि गौतम यामें सोरह पदार्थ विषय हैं सोरह पदार्थ का ज्ञान प्रयोजन है वेप्रमाण १ प्रमेय २ संशय ३ प्रयोजन ४ दृष्टांत ५ सिद्धांत ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय ९ बाद १० जल्प ११ वितंडा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रहस्थान १६ ये सोरह पदार्थ हैं याके तत्त्व ज्ञानमें मोक्ष होतुहै मिथ्या ज्ञानके नाशतें दोषको नाश दोषके नाशतें प्रवृत्तिको प्रवृत्तिके नाशतें जन्मिको जन्मके नाशतें दुःखको दुःखनाशे मोक्षहै अरु प्रत्यक्ष १ अनुमान २ उपमान ३ शब्द ४ येचार प्रमाण हैं इन्द्रिय अरु अर्थके सम्बन्धतें उत्पन्न जो ज्ञान सो प्रत्यक्षहै १ जाके प्रत्यक्ष ज्ञानके अनन्तर अनुमिति होयसो अनुमान २ जाके सादृश्य ज्ञानके अनन्तर उपमिति होयसो उपमान ३ यथार्थ ज्ञानको जो उपदेश सो शब्द ४ ॥ आत्मा १ शरीर २ इन्द्रिय ३ अर्थ ४ बुद्धि ५ मन ६ प्रवृत्ति ७ दोष ८ प्रेत्यभाव ९ फल १० दुख ११ मोक्ष १२ ये बारह प्रमेय हैं इच्छा १ प्रयत्न २ ज्ञान ३ द्वेष ४ सुख ५ दुःख ६ ये छः आत्माके लक्षण हैं चेष्टा १ इन्द्रिय २ सुख ३ दुःख ४ ये चारों जामोंरहैं सो शरीर१ अरुघ्राण २ रसना २ चक्षु ३ त्वक्४ कर्ण ५ येपांच इन्द्रियहैं सो भूतनतें उत्पन्नहैं पृथ्वी १ जल २ तेज ३ वायु ४ आकाश ५ ये पांच भूतहैं गन्ध पृथ्वीको गुण रस जलको गुण स्पर्श वायुको गुण शब्द आकाशको गुण गन्ध घ्राण को विषय रस रसनाको रूप चक्षुको स्पर्श त्वचाको शब्द कानको विषय विषय जो है सो अर्थहै ४ बुद्धि कहिये ज्ञान ५ एक कालमों ये आत्मा में अनेक ज्ञानकी उत्पत्ति नहीं है येही हेतुते अणत्व मनको लक्षणहै ६ अरु

बाणी १ बुद्धि २ शरीर ३ ये तीनका जो प्रयत्न सो प्रवृत्ति ७ प्रवृत्तिहोय जाते सो दोष ८ सो दोष प्रीति द्वेष मोह रूपहै अरु मरिकै जन्म लेनो प्रेत्यभावहै ९ प्रीति द्वेष मोहते सुख दुःखका जो साक्षात्कार सोफलहै १० दुःख कहिये पीडा ११ दुःखनाश मोक्षहै १२ एकमें अनेक विरोध धर्मको जो ज्ञान सो संशय ३ जाके हेतु प्रवृत्तिहोय सो प्रयोजन ४ बादी अरु प्रतिबादी का जो अर्थमें विरोध न होय सो दृष्टान्त ५ सिद्धान्त चारहैं सबशास्त्र १ एकशास्त्र २ नवीन ३ अधिकरण ४ जाके सिद्धिके अनन्तर ओर अर्थकी सिद्धिहोय सो अधिकरण सिद्धान्तहै ६ अवयवपांचहैं प्रतिज्ञा १ हेतु २ उदाहरण ३ उपनय ४ निगमन ५ पर्वतमें वह्निहै ई ज्ञान प्रतिज्ञान है १ धूमते ई ज्ञानहेतु २ जहां धूम तहां वह्नि जैसे रसोई घर मों ई उदाहरण ३ रसोई के घर सादृश्य पर्वत है ई ज्ञान उपनय ३ धूम ज्ञानते पर्वत मों वह्निहै ई ज्ञान निगमन है ७ अरु कार्य अरु कारणका विचार सो तर्क ८ निर्णय कहिये निश्चय ९ सिद्धान्ततें अविरुद्ध जोबादी प्रतिबादीका दूषणभूषण सोबाद१० छलादिकते जोसाधनमें दूषण सोजल्प ११ अपने पक्षके स्थापनो मों हीन जो दूषण सो वितण्डा १२ हेत्वाभास पांचहैं व्यभिचारीहेतु १ विरोधी २ सत्प्रतिपक्ष ३ असिद्ध ४ हेतु ५ बाधित हेतु ५ । १३ छल तीनहैं बाक् १ सामान्य २ उपचार ३ वक्ताके अभिप्रायते अन्यअर्थकी जो कल्पनासो बाक् छल १ जाति विषयक जोछल सो सामान्य २ मुख्यार्थ में लक्षणतें जो छल उपचार १४ सामान्य धर्मते अरु विरुद्ध धर्मते जो दूषण कथन सो जाति १५ बादी का विरुद्धार्थ के चुप रहना सो निग्रहस्थान १६ । ३ अथ चतुर्थ योगशास्त्र याकेआचार्य पातंजलि मुनि यामों चित्तवृत्ति का रोकनो योगमों विषयहै वृत्ति पांच हैं प्रमाण १ विपर्यय २ विकल्प ३ निद्रा ४ स्मृति भेदते प्रमाण तीन हैं प्रत्यक्ष १ अनुमान २ आगमन ३ भेदते विपर्यय कहिये मिथ्या ज्ञान जैसे रस्सी में सर्पज्ञान २ शब्दज्ञानते पाछे होय अरु अर्थते शून्य होय सो विकल्प ३ जैसे खपुष्पादि अभाव ज्ञान विषयक वृत्ति निद्राहै ४ अनुभूति विषय को न भूलना स्मृतिहैं ५ अभ्यासते अरु वैराग्यते पांचोंको रोकनो समाधि द्वै हैं एक सबीज दूसरा निर्बीज ईश्वरकी भक्तिते समाधि सिद्ध होतहै क्लेश १ कर्म २ कर्मफल ३ बासना ४ ई चारोंते रहित जो पुरुष विशेष सो ईश्वरहै प्रणवके जपते अरु ईश्वरकी भक्तितें समाधिकालाभ

अरु बिघ्नका नाश होतहै व्याधि १ सत्कर्म त्याग २ संशय ३ प्रमाद ४ आलस्य ५ अवैराग्य ६ भ्रम ७ जड़ता ८ अश्वस्थता ९ ये बिक्षेप चित्त मोंनाहीं रहत दुःख १ चित्तकी चंचलता २ अंगकंप ३ पूरकरेचकश्वास ४ ये बिक्षेपके संगीहैं याके दूर करनेके हेतु ईश्वरमों चित्त भलीभांति लगावनो काहूको बुरो न मानमो विषयके निवृत्ति होने संताप अरु बिचार ते अरु प्राणायामते चित्त एकाग्र होतुहै या उपायते स्थिर चित्तमें परिमाणते लेके आकाश पर्यंत सब बश्य होतहैं याके अनन्तर जब विचारते शुद्ध चित्तहै तब स्थिर चित्तहै स्थिर चित्तमों सत्य युक्ति प्रज्ञा होतहै ताप्रज्ञाते सबको देखतुहै ईसबीजसमाधि है याके रोकनेते निर्बीज समाधि होतहै वा कालमें पुरुषमात्रै रहतुहैं ब्रत १ मंत्रजप २ ईश्वर विषे फल कामना त्यागि सर्व समर्पण ३ ये तीन क्रिया योगहैं अरु क्रिया योगते समाधि में चित्त लगतुहै अरुक्लेश कम होतहै अविद्या १ अहंकार २ राग ३ द्वेष ४ आग्रह ५ ये पांच क्लेशहैंअविद्या कहियेअज्ञान १ पुरुष अरु अन्तःकरण की एकता अहंकार २ सुखमें तृष्णाराग ३ पूर्व अनुभूत दुःख स्मरण ते विरोध वृत्ति द्वेष ४ शरीर आदि बस्तुके स्थिरतामों तृष्णा आग्रह ५ स्थूल सूक्ष्म क्लेशनका अरु ताक्लेशनकी सुखदुःखमोहरूपवृत्तिनकाध्यानते त्यागकरनो अरु क्लेशजन्य अशुभ कर्मको फल याजन्ममोहै वा जन्मांतरमोहै विवेकीको सब दुःखहीहै बुद्धि अरु पुरुषका जो संयोग सो संसारको हेतुहै भोग अरु मोक्षकी उत्पादक बुद्धिहै पुरुष चेतनमात्रहै अरु बुद्धिरूप दर्पणमों प्रतिबिंबसंबंध स्वरूप आत्माहै एक बिबेकी पुरुषकी अविद्या नष्ट होनेते और सब पुरुषोंमें अविद्या नष्ट नहीं होत बुद्धि अरु पुरुषका अविवेक अज्ञानते होतहै अरु बिबेक ज्ञानते अज्ञानको नाश होतहै यही पुरुष की मुक्तिहै अरु बिबेक ज्ञानते पुरुषकेसबीज समाधि पर्यंत सात प्रज्ञाउत्पन्न होतहैं हमसब पदार्थ जान्यो १ हमारें अविद्यादि क्लेश नाश भयो २ त्यागको उपाय जान्यो ३ हमको विवेक ज्ञान भयो ४ मेरी बुद्धि कृतार्थ भई बुद्धिवृत्ति अपने कारण मोंलयहैगई पुनः उत्पन्न नहीं होयगी ५ हमारे स्वाधीनसमाधि है ६ अब निर्विकार स्वरूप भयो ७ ईसात प्रज्ञाहैं संयोग करनेते क्लेश क्षय होत हैं अरु ज्ञानको प्रकाश होतहैं यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ई आठौ योगांगहैं अहिंसा १ सत्य २ अचौर्य ३ ब्रह्मचर्य ४ असंग्रह ५

ईपांच यमहैं शौच १ संतोष २ तप ३.मंत्रजप ४ ईश्वर निष्टा ५ ई पांच नियमहैं स्थिर सुख आसनहै आसनते सुख दुःखादि द्वंद्वको नाश होतुहै श्वास अरु श्वासका जोगतिविच्छेदः सो प्राणायाम है सो याते चित्तमों प्रकाश होतहै ४ इंद्रियनके विषयते निवृत्त करके चित्तमों लगा वनो प्रत्याहारहै ५ नासिकाके अग्रभागमो अरु नाभि चक्रादि बस्तुबिशेष में चित्तकास्थिरकरना धारणाहै ६ चित्तका ध्येय विषयक जो वृतप्रवाह सो ध्यान है ७ वृत्ति आदि भेद शून्य अर्थ मात्रका भान होय जेहि मों सो समाधिहै ८ धारणा ध्यान समाधि ये तीन एकमोंहोहिं सोसंयमहै अरुशब्द के संयमते सब प्राणिका शब्दज्ञान होतिहै अरु संस्कार संयमते संस्कार साक्षात्कार करनेसे पूर्वजन्मको ज्ञानहोतहै परचित्त विषे संयमते परचित्त का ज्ञान होतहै अरु शरीरके रूपमें संयमते योगी.अन्तर्द्धान होतहै पुरुष में संयमते पुरुषको ज्ञान होतहै अरु प्रकृति १ बुद्धि २ अहंकार ३ रूप ४ रस ५ गन्ध ६ स्पर्श ७ शब्द ८ चक्षु ९ रसना १० कर्ण ११ नासिका १२ त्वचा १३ वाक् १४ पाणि १५ पाद १६ पायु १७ उपस्थ १८ मन १९ पृथ्वी २० जल २१ तेज २२ वायु २३ आकाश २४ पुरुष २५ ई पचीसतत्त्व हैं अरु प्रकृतिते बुद्धिकी उत्पत्ति बुद्धिते अहंकार अहंकारते रूपते लेके मनलों सोरहकी उत्पत्तिहैं गन्धते पृथ्वी रसते जल रूपते तेज स्पर्श ते वायु शब्दते आकाशकी उत्पत्तिहै अरु अपने निरुपाधिक स्वरूपमें जो स्थिति सो मोक्ष पदार्थहै ४ अथ पञ्चम सांख्य शास्त्र याके आचार्य कपिलमुनि यामें.प्रकृति पुरुषको विवेक विषयहै अरु अत्यन्त दुःख त्रयकी निवृत्ति प्रयोजन पच्चीस तत्त्वके ज्ञानते विवेक होतहै पुरुष १ प्रकृति २ बुद्धि ३ अहंकार ४ रूप ५ रस ६ गन्ध ७ स्पर्श ८ शब्द ९ चक्षु १० जिह्वा ११ नासिका १२ त्वचा १३ कर्ण १४ वाक् १५ पाणि १६ पाद १७ गुद १८ उपस्थ १९ मन २० पृथ्वी २१ जल २२ तेज २३ वायु २४ आकाश २५ ई पचीस तत्त्वहैं प्रकृतिते बुद्धिकी उत्पति बुद्धिते अहंकार अहंकारते रूप १ रस २ गन्ध ३ स्पर्श ४ शब्द ५ ई पञ्च तन्मात्राकी अरु चक्षु १ जिह्वा २ नासिका ३ त्वचा ४ कर्ण ५ वाक् ६ पाणी ७ पाद ८ गुद ९ उपस्थ १० मन ११ ईग्यारह इन्द्रियहूकी उत्पतिहै अरु पंच तन्मात्राते तेज १ जल २ पृथ्वी ३ वायु ४ आकाश ५ ईपञ्चस्थूल भूतनकी क्रमते उत्पतिहै अरु दिशा १ काल २ आकाश

तेंसात्विक अहंकारतें एकादशइंद्रिय की अरु तामस अहंकारतें पंच तन्मात्रा की ई सब इंद्रिय अहंकारतें उत्पन्नहें भूतनसे नहीं हैं अरु शरीर पुरुष नहीं है पुरुषको भोग हेतु शरीरहै अरु जाग्रत् १ स्वप्न२ सुषुप्ति ३ ईतीन अवस्था बुद्धि निष्टहें पुरुषइनको साक्षीहै जन्म १मरण २ सुख ३ दुःख ४ बंध ५ मोक्ष ६ ईसबै पुरुषके भिन्न भिन्न व्यवस्था तें पुरुष बहुत हैं अरु पुरुषमें कोई धर्म नहीं रहतु पुरुष प्रकाश रूपहै अरु असंग है ईश्वरनहीं है जो ईश्वर मानेगो तौ ईश्वर बद्धहै वह भयो तो मूढत्वमेंसृष्टिकर्तृत्वका असंभवहोयगो जो मुक्त मानोगेतौ भी राग द्वेषकेअभावतें सृष्टि कर्तृत्वका असंभव है यातें ईश्वर नहींहै अरु ईश्वरप्रतिपादक जेती श्रुति स्मृति हैं सो सब मुक्तपुरुषके प्रशंसापरहैं अरुसत्व१ रज२ तमोगुण३इनकी जोमान अवस्था सो प्रकृति है प्रकृति अतिसूक्ष्म है अरु परिणामी है अति सूक्ष्मत्वं मे प्रकृति प्रत्यक्ष नहीं है किंतु बुद्धयादि कार्यतें अनुमेयहै बुद्धयादि सृष्टि पुरुष के भोगमोक्ष केहेतुहै प्रीतितें सृष्टि होतहै अरु बैराग्यतें मुक्ति होत है यज्ञादिकतें मोक्ष नाहीं होत मोक्ष प्रकृति पुरुषके बिबेकतें होतहै बुद्धि तें ज्ञान १ बैराग्य २धर्म ३ ऐश्वर्य ४ ई चार उत्पन्न होतहें अरु पशु आदिक की बुद्धिरजतम के संबंधतें विपरीत होतहै याते पश्वादिकके बुद्धिमों अधर्म १ अज्ञान २ अबैराग्य ३ अनैश्वर्य ४ ईचारों धर्म रहतुहैं अरु सूक्ष्म में महाभूत उत्पन्नहोत है महा भूततें शरीर अरु काहू के मतमों पंच भूतको शरीरहै काहूके आकाश रहितच्यार भूतको काहूके पृथ्वी १ जल २ तेज ३ तीन भूतको काहूके पृथ्वी १ जल२है भूतको काहूके वलपृथ्वीको शरीरहै अरुपंच भूतको स्वभाविक चैतन्य धर्मनहीं है अरु प्रत्येक में भी चैतन्य धर्म नहीं यातें सूक्ष्म शरीरतें दुःख सुख जानिपरतहै जबलों विवेक ज्ञान नहीं होत तबलों सूक्ष्मभूतमें आरंभ करबरहतहै असत्की उत्पति नहीं होत सत्की उत्पत्ति होतहै अरु कारण में जो लयसो नाश कहावत है सृष्टि कालमों धर्म अधर्म दोउतें पुरुषबद्ध होतहै प्रलय में धर्म अधर्म दोऊते पुरुष बद्ध होतहै प्रलय में धर्म अधर्म दोऊ सूते रहतहैं अरु सृष्टि कालमें पुनः फलोन्मुख होइकै अधर्म धर्म दोऊ शरीरका आरंभ करतहैं अरु मुक्तकालमें धर्म अधर्मका नाश ह्वै जातहै सच्चिदानन्दई आत्माका रूपहै आत्माहै ई सब जानतहैं और चिदंशमें भी काहू को संदेह नहीं होत आनंदांशमें सब को संदेहहै सांख्यके अभ्यास से क्रमते झटिति आ-

नंद लाभ होय जातहै कोई ऐसा मानत हैं सांख्य शास्त्र में आदि में अर्थ शब्दका प्रयोगहै यातें सांख्य मतमें . ईश्वर नित्य सिद्धहै ५ अथषष्ठ बेदांत शास्त्र ॥ याके आचार्य वेदव्यास मुनि यामें जीवब्रह्मैक्य शुद्ध चैतन्य बिषे है अज्ञान निवृत्ति आनंद प्राप्ति प्रयोजनहै अरुसाधन चार बैराग्य १ बिबेक २ शमादिषट् ३ मुमुक्षुता ४ ब्रह्माइंद्रादि लोकके सुखको काक बिष्ठादिवत् जाननो बैराग्य १ ब्रह्म नित्य और सब अनित्य यह बिबेक २ अरु शम १ दम २ उपरति ३ तितिक्षा ४ श्रद्धा ५ समाधान ६ सदा बासना कात्याग सो शम बाह्यइन्द्रियनका बिषयतेनिरोधदम २ विषयतेपीठ उपरति ३ शीत उष्णसहन तितिक्षा ४ गुरुवेदांत बाक्यमों बिश्वास श्रद्धा ५चित्तएकाग्रता समाधान ६ संसार बंधनतेंकबमैं छुटिहों यहदृढनिश्चय मुमुक्षुता ७ ये सब साधन युक्तशांतचित्त जितेंद्रिय श्रद्धावान्याको अधिकारीहै वस्तु में अवस्तुको आरोपसो अध्यारोपहै जैसे रज्जुमों सर्पको आरोपह वैसेही ब्रह्ममों जगत्को सच्चिदानंद ब्रह्म बस्तुहै अज्ञानादि सकल जड़ समूह अवस्तुहै सत् असत् करके अकथनीय त्रिगुणात्मक ज्ञान का बिरोधिभाव रूप होय सो अज्ञान कहिये सो अज्ञान व्यष्टिअभिप्राय ते अनेक है अरु समष्टितें एक है व्यष्टि कहिये अनेक प्रकार समष्टि कहिये समूह जैसे वनमों व्यष्टि अभिप्रायतें अनेक ब्रह्मई व्यवहार होत अरु अनेक वृक्षमें समष्टि अभिप्रायतें वन तैसे अनेकत्व करिकै भास माने जो जीवन को अज्ञान वाके नानात्वकरिकै अनेकत्व व्यवहार होतहै है अरु जीवन को जो अनेक अज्ञान वामें समूहत्व अभिप्रायं ते एकत्व व्यवहार होतहै समष्टि उत्कृष्टि उपाधिकरके शुद्धसत्वप्रधान जो चैतन्य है सो सर्वज्ञ सबको नियामक अंतर्यामी जगत्को कारण ईश्वरहै याको आनंदमयकोशसुषुप्तिहै और कोशपांचहैं ५ अन्नमय १ प्राणमय २मनोमय ३ विज्ञानमय ४ आनंदमय ५व्यष्ट निकृष्ट उपाधिकरके मलिनसत्व प्रधान जो चैतन्यहै सो अल्पज्ञअनीश्वर प्राज्ञहै वाकेहूं आनन्दमयकोश सुषुप्ति है अरु सुषुप्तिकालमों चैतन्यकरिके प्रकाशितजोअतिसूक्ष्मअज्ञानवृत्तिता करिकेईश्वरअरु प्राज्ञयेदोऊआनन्दका अनुभव करतेहैं जैसे बनकेवृक्षका अभेद तैसे समष्टिव्यष्टिको अभेदहै अरुजैसे बनके आकाशको अरुवृक्षके आकाशको अभेदहै तैसे समष्टि उपाधि विशिष्ट ईश्वरको अरु व्यष्टि उपाधि विशिष्ट प्राज्ञको अभेदहैं अज्ञान अरु अज्ञानोपाधि विशिष्ट चैतन्य ये

दोऊका आधार जो उपाधि रहित चैतन्य सोतुरीय है अज्ञानकी द्वैशक्तिहै एक आवरण दूसरी विक्षेप जैसे अल्पमेघ सूर्य मण्डलको आवरण करत है तैसेई अज्ञान आत्माको आवरण शक्ति विशिष्ट जो आत्माहै वाको कर्तृत्वभोक्तृत्व सुख दुःखादि संसारका संभवहै जैसे अपने अज्ञानते ढांपी जो रस्सी है वामें सर्पको संभवहै अरु जैसे रस्सीको अज्ञान अज्ञानसों ढांपी जो रस्सीहै वामें विक्षेप शक्तिते सर्पका उत्पादिक है जैसे ईअज्ञान ते ढांपे आत्मामों विक्षेप शक्तिते आकाशादि प्रपञ्चको उत्पादक है २ अरु तम प्रधान जो विक्षेप शक्ति विशिष्ट अज्ञानताविशिष्ट जो चैतन्य ताते आकाश उत्पन्न होतहै आकाशते वायु वायुते अग्नि अग्निते जल जलते पृथ्वी इन्हीं आकाशादि सूक्ष्म भूतनते पञ्च महाभूत और सूक्ष्म शरीरकी उत्पत्तिहै सूक्ष्म शरीर जो है सोई लिंग शरीर यामें सत्रह १७ अवयव रहतहैं, पांच ज्ञानेंद्रिय ५ पांच कर्मेंद्रिय ५ पांचप्राणादि बुद्धि १६ मन १७ निश्चयात्मक अन्तःकरणकी जो वृत्तिसो बुद्धि है संकल्पात्मक जो अन्तःकरणकी वृत्ति सो मनहै चित्तको बुद्धिमें अन्तर्भावहै अहंकारको मनमें अन्तर्भावहै १ बुद्धि अरु मन आकाशादिकों के मिलतसात्विक अंशते उत्पन्नहैं ई जो बुद्धिहै सो ज्ञानेंद्रिय के संयुत विज्ञानमयकोश होतहै २ अरु विज्ञानमयकोश जो है सो कर्तृत्वभोक्तृत्वका अभिमानीहै यह लोक परलोक गामीहै सो व्यवहारमें जीव कहावतहै अरु मन ज्ञानेन्द्रियके सहित मनोमयकोश होतहै ३ अरु प्राणवायु पांचहैं प्राण १ अपान २ व्यान ३ उदान ४ समान ५ हृदयको वायु प्राण गुदाको अपान मन सब शरीरको व्यान कंठको उदान नाभिको समान पांचों प्राण कर्मेन्द्रियसहित प्राणमयकोश होत है १ आनन्दमयकोशमें अरु कर्तृत्वहै मनोमयकोशमें इच्छा अरु कर्णत्वहै प्राणमयकोशमें क्रिया अरु कर्मत्वहै ई तीनोंको सूक्ष्मरूप कहावतहैं सूक्ष्मरूप समूहमें एकबुद्धि विषयत्व करिकै वनसादृश्य समष्टिहै अरु सब सूक्ष्म शरीर में अनेक बुद्धि बिषयत्व करिकै व्यष्टिहै अरु समष्टि उपाधि विशिस्ट जो चैतन्य है सो सूत्रात्मा अरु हिरण्यगर्भ कहावतुहै तहां ज्ञान १ इच्छा २ क्रिया ३ ई तीनों शक्तिहैं विज्ञानमयादिकोश तीन जो हैं सो जाग्रत् अवस्थाके बास नासे स्वप्नहै स्वप्नकालमें सूत्रात्मा जो है सो मनकी वृत्तिते सूक्ष्म विषय को अनुभव करतहै आकाशमें शब्द वायुमें शब्द स्पर्श तेजमें शब्द स्पर्श

रूप जलमें शब्द स्पर्श रूपरस पृथ्वीमें शब्द स्पर्श रूपरस गन्ध हैं अरु पञ्चभूततें भूर्लोक १ भुवः २ स्वर ३ महर४ जन ५ तप६ सत्य७ईसात लोक ऊपरके उत्पन्न होतहैं अरु अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ ईसात लोक नीचे के उत्पन्न होतहैं एतत्स मूहोपाधि विशिष्ट चैतन्य विराट् है अरु स्थूल शरीर जो है सो अन्नको विकार है याते अन्नमें कोशहै सो स्थूल भोगतें जाग्रत् है स्थूल देहकी जो अनेक उपाधितद्विशिष्ट जो चैतन्य सो विश्वहै अरु अज्ञान विशिष्ट जो चैतन्य सो जीवहै ज्ञान विशिष्ट चैतन्य ईश्वरहै भाग त्याग लक्षणातें अज्ञान का त्याग करो अरु ईश्वर लक्षण में ते ज्ञानको त्याग करो तो दोऊ चैतन्य एकहै ब्रह्म सत्यहै और सब मिथ्याहै ऐसी दृष्टि समुझते जीवहै सो ब्रह्महै इति शास्त्र ॥ अथ वेद ॥ सो बेद अनादि सर्व पुराण शास्त्र संहितादि औयावत् व्यवहारपरिमाणको मूलहै अरु सब आस्तिक सम्मत अपौरुषेय अगाध आशय अनन्तहै तेहि हेतु कह संक्षेप से लिखा वेदके भेद चार ऋग्वेद १ यजुर्वेद २ सामवेद ३ अथर्वणवेद ४ ऋग्वेदकी मुख्यशाखा आठ सोसाकल १ वाष्कल २ ऐतरेय ३ ब्राह्मणारण्य ४ सांख्यायन ५ मांडूक ६ कौषीतकीय ७ आरण्यक ८ औ आठ स्थानहैं चर्चा १ श्रावक २ चर्चक ३ श्रवरणीयपार ४ क्रमपार ५ क्रमपद ६ क्रमजटा ७ क्रमदण्ड ८ आठ स्थानका क्रमसे अर्थ चर्चा कहिये अध्ययनै १ अध्ययन सुनावै सो गुरु श्रावक २ चर्चक कहिये शिष्य ३ वेदकी समाप्ति सो श्रवणीयपार ४ क्रमपार संज्ञा कहिये संहिता५संहिताका पदच्छेद जो पदनामसे ख्यात सो क्रमपद ६ संहिताकी जटा सो क्रमजटा ७ संहिताका दंड सो क्रमदंड ८ क्रमपारादि चार स्थानके चार पारायणहैं १०५८० ऋचाका एक पारायण होत है संहिताका १ औ पदका २ ई दोई प्रकृति पारायण जटाका १ औ दण्डका २ ई दुई विकृति पारायण विकृति नवहैं ६ क्रम १ जटा २ माला ३ शिखा ४ लेखा ५ ध्वज६ दंड७ रथ ८ घन ९ इनके लक्षण संहिताके पदनको अनुलोम विलोम पढ़ना सो क्रम १ दुइ पदको वा तीनपदको आदि औ अंतमें अनुलोम अरु मध्यमें संधि सहित विलोम पठना सो जटा २ जटा कहिये उसके आगेके पदको एकवार उच्चारण कर तीनपद ससंधिक विलोम पढ़के पुनः अन्तमें तीनोंपद अनुलोम पठना सोघन ३ इत्यादि ॥ ऋग्वेदके अध्याय ६४

मण्डल १० मण्डल कहि ये खंड वर्ग २००६ सूक्त१०१७ पद १५३७९२ इतिऋग्वेद॥ अथ यजुर्वेद ॥ यजुर्वेदकीशाखा ८६ बेचरक १ अ.ह्वारक २ कट ३ प्राच्यकट ४ कपिशठलकट ५ आसपर्णाय ६ बासपर्णीय ७ वार्तान्तरेय ८ श्वेत ९ श्वेततर १० औपमन्यव ११ मैत्रायणीय१२ कासब १३ माध्यंदनीय १४ इत्यादि ॥मैत्रायणीय शाखाके भेद ७ मानव १ दुंदुभेय २ चैकेय ३ वाराह ४ हारिद्रवेय ५ श्यामा ६ श्यामायवीय ७॥ बाजसनेय शाखाके भेद १७ का रव १.माध्यंद्निीय २ शावीय ३ स्थापायनीय ४ कापिंल ५ पौंड्र ६ कात्यायनीय ७ इत्यादि ॥ वाजसनेय शाखाके मंत्र॥ १९०० याहीको शुक्लयजु औ कृष्णयजु कहत हैं मन्त्रसे चौगुन ब्राह्मण भागहै ॥ तैतरेय शाखाके भेद २॥ औरव्य १ कांडिकेय २ कांडिकेयके भेद ५ ॥ आपस्तंबी १ बौधायनी २ सत्याषाढ़ी ३ हिरण्यकेशी ४ औधेयी ५ तैतरेय शाखाके कांड ७ प्रश्न ४४ अनुवाक ६५१ । पताशी २१९८ पद १९२९० अक्षर २५३८६८ ब्राह्मण विषै वाक्यकी संख्या १९४८० अध्याय ४४ यह तैतरेय संख्या है यही रीतिसे और सबका भेद भाष्यसे जाने॥ इतियजुर्वेदः २॥ अथ सामवेद ॥ सामवेदकी शाखा १०००।देश काल कलहादि निमित्तसे बहुत शाखा लोपसी ह्वैगईं जोबचीं सो कहत हैं आसरायणीय१ वामुरायणीय२ वार्तान्तरीय३ प्रांजल४ ऋग्वैनविधि५ प्राचीनयोग्य ६ एणापणीय ७ इत्यादि एणापणीय शाखाके नव भेद एणापणीय १ पराव्यायनी २ शांत्यमुद्गल ३ खल्वल ४ महाखल्वल ५ लांगल ६ कैथुम ७ गौतम ८ जैमिनीय ९ इन्हसोरह शाखामों तीन शाखा विख्यातहैं सो प्रसिद्ध नहीं हैं गुजरात देशमों कैथुमी शाखा प्रसिद्ध हैं १ कर्णाटक देशमों जैमिनी शा० प्र० २ महाराष्ट्र देशमों एणायनीय शा०प्र० ३ कैथुमी शाखाके भेद ६। कौथुम १ आसुरायण २ बातायम ३ प्रांजलि ४ प्राचीनयोग्य ५ नैगमनीय ६ इति॥ आग्नेयमंत्र १०८ पावमानमन्त्र १०४ ऐंद्रमन्त्र ६ आष्ट सुपर्णप्रेक्ष्य शाखा सहित बालखिल्य शाखा भेद ६० आरण्यक उपनिषद् सहित औ सुपर्णप्रेक्ष्य अरु बालखिल्य सहित सूर्य सूक्तके भेद ९०० ईरुब साम समूहके हैं सामके आचार्य १३ इतिसामवेद ३॥ अथ अथर्वणवेद॥ अथर्वणकी शाखा नव हैं पैप्पल१ दांत २ प्रदांत ३ स्तौत ४ औत ५ ब्रह्मदा ६ शौनकी ७ देवदर्शी ८ चरण विंद्य ९ सब शाखाके मन्त्र १२००० कल्प पांचहैं नक्षत्र कल्प १ विधान

कल्प २ संहिता विधिकल्प ३ अभिचार कल्प ४ शांतिकल्प ५ इति अथर्वण ४ ॥ कर्म १ उपासना २ ज्ञान ३ तीनको वेद प्रतिपादन करतहै यही से वेद त्रिकांड ॥ विधि औ निषेध मार्ग तें मुख्यफल मोक्ष अरु अवांतर फल स्वर्गादि सुख कहतहैं ॥ वेद ध्यान पांचवीं ताका अरुणशरीर कमल नेत्र ऋग्वेद १ चारहाथका दीर्घ ताम्ररंग शरीर दूबर कनक नेत्र कपाली यजुर्वेद २ मालादंडधारी शांत दांत पवित्र वसन रवि समलोचन पांच हाथ शरीर सामवेद ३ तीक्ष्णस्वभावं कामी क्रोधी जगत्प्रिय सातहाथ का तनु अथर्वण ४ ऋग्वेदका अत्रिगोत्र ब्रह्मादेवता गायत्रीछन्दः १ यजु भारद्वाजगोत्र महादेव देवता त्रिष्टुप्छन्दः २ सामका काश्यपगोत्र विष्णुदैवत जगतीछन्दः ३ अथर्वणका बैतायन गोत्र इन्द्र देवता अनुष्टुप्छन्दः चारों वेदके अंग ६ ॥ शिक्षा१गृह्यसूत्र२व्याकरण३ निरुक्ति४ छन्दशास्त्र ५ ज्योतिष् ६ चार वेदके चारउपवेद । ऋग्वेदका आयुर्वेद उपवेद सो चिकित्साशास्त्र १ यजुर्वेदका धनुर्वेद उ० सो युद्धशास्त्र २ सामवेदका गंधर्व उपवेदउ० सो सांगीतशास्त्र ३ अथर्वणका अर्थशास्त्र उ० सो शिल्पशास्त्रसहित नीतिशास्त्र ४ इति निगमसंक्षेपः ॥ + ॥ अथतंत्रशास्त्र । याकेकर्ता महादेव अनेक छन्द देवता सहित मंत्र यंत्रादि शब्दार्थ सृष्टि यामें प्रतिपाद्य विषयहै धर्म १ अर्थ २ काम ३ मोक्ष ४ प्रयोजनहैं फल कामनायुत याको अधिकारीहै शिवके निर्गुण औ सगुण स्वरूप ज्ञानते मोक्ष होतुहैं प्रकृति से परे सो निर्गुण १ प्रकृतियुत सगुण २ सृष्टिदुइहैं अकार उकार मकार नादबिंदु ई शब्द सृष्टि १ रुद्रादि अनेकदेवता और चराचर जगत् ई अर्थ सृष्टि २ याको क्रम परब्रह्मतें शक्तिभई शक्तितें नाद २ नादतें बिंदु ३ शिवशक्तितें सूक्ष्मशब्द होतहै यही को शब्द ब्रह्म कहतहैं पराशक्तिही शरीरमों कुण्डलनी नाडीरूप सों शब्द ब्रह्मरूप होयके परा १ पश्यंती२ मध्यमा ३ वैखरी ४ चार विधि बाणी होतहै अकारादि शकारांत पचास वर्ण कुण्डलनीरूप पराशक्तितेंही होतहैं शिवशक्तिते महत्तत्त्व १ महत्तत्त्वतें अहंकार अहंकार तीनि विधि सात्विक आदिभेदते सात्विक अहंकार ते दशइन्द्रियन के दश देवता वे दिशा १ पवन २ सूर्य ३ वरुण ४ आदि राजस अहंकारतें दश इन्द्रिय १० तामस अहंकार ताते तन्मात्रा द्वारा पंचमहाभूत शब्दतें आकाश १ स्पर्शतेंवायु २ रूपतें तेज ३ रसतें जल ४ गन्धतें पृथ्वी ५ आकाश स्वच्छरूप १ वायु श्याम २२ तेजलाल ३ जल

शुक्ल ४ पृथ्वीपीत ५ पांच भूतन के पांचमगडल हैं षट् बिंदुयुत गोल मगडल आकाश को १ वायुका त्रिकोण स्वस्तिके चिह्नयुत २ अग्निका अर्द्धचन्द्राकार जलका कमलके आकार ४ पृथ्वीका वज्र चिह्नयुतचौरस५ पंचभूतनकी पंचकला निवृत्ति १ प्रतिष्ठा २ विद्या ३ शांति ४ शांत्यती ता ५ चराचरजगत् पांच्र भूतरूप हैं अचर पर्वत वृक्षादि भेदतें अनेक विधि १ चर तीन भेद को कृमि कीटादि स्वेदज १ सर्प पक्षी आदि अगडज २ मनुष्यादि जरायुज ३ मातृका के अक्षरनते सब मंत्रन की उत्पत्ति मंत्र विविध पुरुष १ स्त्री२ नपुंसक ३ पुनः मंत्रके चारभेद ४ सिद्ध१ साध्य २ सुसिद्ध ३ अरि ४ मंत्रनके दोष ५४ छिन्न १ रुद्ध२ शक्तिहीन ३ परांमुख ४ बधिर ५ नेत्रहीन आदि दोषयुत मंत्रतें फल नाहीं होत मंत्रनके संस्कार १० जनन १ जीवन २ ताड़न ३ बोधन ४ अभिषेक ५ विमलीकरण ६ आप्यायंन ७ तर्पन ८ दीपन ९ गुप्ति १० मातृका सें मन्त्रका उद्धार सो जनन १ प्रणवयुत जपसो जीवन २ मंत्राक्षर लिख चंदन जलसे मतिअक्षर छिरकनो सोताड़न ३ इत्यादि ईदश संस्कारसे अवश्य मन्त्र सिद्धहोतु हैं कूर्म चक्रतें सिद्ध असाध्यादि भेद बिचार करनो मन्त्र जपके स्थान तीर्थ नदी तीर पवित्र बन देवता मंदिर आदि। गुरुलक्षण कुलीनसर्वागम शास्त्रको तत्त्वजानै जितेंद्रिय सत्यवादी आदि । शिष्य लक्षण कुलीन शुद्धमन पुरुषार्थयुत वेदपठित जितेंद्रिय आदि। तन्त्रशास्त्रमोंदीक्षाको ग्रहण मुख्य इष्टदेवताका गुरुसे मंत्रोपदेश सो दीक्षा। पापनाश करि दिव्य ज्ञान देतहै याते दीक्षानाम भयो याके भेद ४ चार क्रियामयी १ वर्णमयी २ कलामयी ३ बेधमयी ४ चारों के कर्ता गुरु नित्य कर्म कुंडमंडपादिकरनो क्रियामयी१ शिष्य देहमोंवर्णादि न्यास २ निवृत्त्यादि पांच कलाको तेहि३ अंगनमों योजनकदी०३ शिष्य शरीरमों चेतंनशक्तिका व्यापकध्यानसोवेधमयीदी० ४ अध्वाक्षहैं कलाध्वा १ तत्त्वाध्वा २ भुवनाध्वा ३ वर्णाध्वा ४ पदाध्वा ५ मंत्राध्व ६ अध्वा कहिये रास्ता गुरु को ईष्ट अध्वाका साधन उचितहै देवता पूजा का सात वा पांच आवरण हैं यही सब रास्ता से जीवको मोक्ष होत हैं ॥ इतितंत्रशास्त्रसंक्षेपः ॥

इतिमानसदीपिकायांपुराणादिशास्त्रनिगमागमवर्णनेद्वितीयःप्रकाशः२ ॥

अथकाव्यअंग ॥ या रामायणमों श्रीगोसाईं जी यावत काव्य के अंग

धरेहैं अरु बिना काव्यजाने बहुतजन बहुत ठौर शंका करतुहैं तातेलक्षण और और काव्यके ग्रन्थन के अरु उदाहरण या रामायणके सरलरीतिसे लिखेजातेहैं ॥ अथकाव्यलक्षण ॥ शब्द अर्थ सुन्दर गुणयुत दोष रहित अथकाव्यप्रयोजन ॥ यश सम्पत्ति आनन्द दारिद्रनाश चातुरता संसार अरु रामवश होवो ॥ अथकाव्यकोकारण ॥ चित्तताके कारण तीनशक्ति १ व्युत्पत्ति २ अभ्यास ३ शक्तिदेव कृपा ॥ यथा जेहिपरकृपाकरहिंजनजानी । कविउर अजिरनचावहिं बानी १ व्युत्पत्ति पठन ॥ यथा गुरुगृहगये पठन रघुराई २ अभ्यास करे सिद्धहोय २ यथा उलटानाम जपतजगजाना । सो काव्य ३ भांति उत्तम १ मध्यम २ अधम ३ अथ उत्तम जीव व्यंग प्रधान ॥ यथा नीक दीन हरि सुन्दरताई १ टी० नीकको बुरो समझनो लक्षणा तातें नारदको अनुचित व्यंग अथ मध्यम व्यंग वच्यवरावर यथा कहँ कुम्भज कहँ सिंधु अपारा २ टी०. इनको तेज देखाय रामका तेज सूचित कर संदेह दूरहोवो व्यंग अथ अधम जामों व्यंग नहीं सो द्वैभांति एकशब्द चित्र यथा मारुमारु धरुधरु धरु मारू १ दूसरो अर्थ चित्र यथा नील सरोरुह नील मणि नील नीर धरश्याम टी० उपमातें चमत्कार अर्थ है । अथशब्द अर्थ निर्णय सुनाय सो शब्द बुझाय सो अर्थ सो शब्दद्वै भांति ध्वन्यात्मक बाजातें १ वर्णात्मक मुखतें २ सो तीन भांति वाचक १ लक्षक २ व्यंजक ३ अरु अपरसब चारिभांति प्रभु सम्मति वेदादि १ मित्र सम्मित स्मृत्यादि २ कांता सम्मित पुराणादि सर्वोपकारक आगम ४ अथ वाचक जो सुनतहीं जानै यथा जलतें पानीको बोध सो चारिभांति जाति १ देवादि इच्छा २ भैया आदि गुण ३ श्यामादि क्रिया ४ स्वरारि आदिअथ लक्षक सुधे शब्द मोटेह्वो भाव यथा धिंकधर्मध्वज धंधकधोरी टी० है ऊंचो पैनीचो बोधकहै । अथ व्यंजक अधिक अर्थ बोधवै यथा मोर मनोरथ जानेहु नीके । बसहु सदाउरपुर सबहीके॥टी० उरपुरतें सबके हृदयसों हमारी ऐसी मति देहु । अथ अभिधालक्षण बहुत अर्थके शब्दमों योगादिक तें एक अर्थ प्रतीतिहोय यथा काक पक्ष शिरतें जुलुफमाथ को अरु भाल तिलकसे ललाटको अथ लक्षणालक्षण मुख्यार्थ त्यागि और अर्थ करे सो द्वैप्रकार एकानरूढी ध्वनिरहित यथा रामगवन मंडपतबकीन्हा टी० मंडपरूढि अथ योगरूढि यथा पंकजकोकलोक सुख दाता टी० पकज योग रूढिहै अथयौगिकयथा जापकजनप्रह्लाद जिमिपालहि दलसुरसाल ॥

मुख्य और होयतही प्रोषित अलंकार अरु जहां भाव अंग होय मुख्य और होय तहां उर जस अलंकार अरु जहांभाव शांतिकादिक अंग होय मुख्य और होय तहां समाहित अलंकार रसन कहिये जानै रस ध्वनिहै येगुनी भूत व्यंगहै सो मध्यम के प्रसंगमों उदाहरण कहेंगे अब रसको स्वरूप कहत हैं रसको मूलभाव है तातें प्रथमहि भावको लक्षण कहियतु है भावसबतें बड़ोहै बासना रूप जानिये सो चारप्रकार विभाव१अनुभाव२ संचारी३अस्थायी४ अरुभाव भेदसों सात्विक भाव जोहै सो अनुभावैंही मों गनिये अथ विभाव लक्षण जातें अस्थायिभाव होइ सो विभाव १ अथ अनुभाव लक्षण थिरभाव कोप्रगटै जोसो अनुभाव अरुसंचारीलै सबरस में संचरै सो विभाव द्वैभांति आलंबन १ जो थिरभावको स्थान यथा सीतहिं पहिराये प्रभुसादर ॥ दूसरो उद्दीपन सुधिआयेतें सोद्वैभांति दैवी यथानव पल्लवफल सुमन सुहाये मानुषी २ यथापटउरलाइशोंच अतिकीन्हा यथा बोलबेदिख बो टेढ़ो अरु सात्विक भाव जेतोहै अरु आलिंगन चुंबन इत्यादि यथा माषे लषण कुटिल भै भौहें । रदपुट फरकत नयन रिसोहैं॥ अरु सात्विक प्रकार ८ आठ अस्मंव १यथारहि जनु कुंवरि चित्र अवरेखी स्वेद२ यथा श्रम बिंदु मुखराजीव लोचन अरुण तनसों नितकैंनी रोमांच ३ यथा श्यामल गात रोम भये ठाढ़े स्वरभंग ४ यथा पुलकित तनु मुख आवन वचना कंप ५ यथा थरथर कांपहिं पुर नर नारी॥विवरण श्रीहतभये भूप धनुटूटे६ अश्रु ७तासुदशा देखी सखिन्ह पुलकगात जलनै नप्रलय ८ ब्याकुलराउ शिथिल सबगाता के चित मत जृंभा यथा लरिका श्रमितउ नींद बश शयन करा बहु जाइ अथसंचारी भाव ३३ निर्वेद १ यथा सब परिहर रघुवीरहिं भजो भजहिं जहिं संत ग्लानि २ भइ ग्लानि मेरे सुत नाहीं शंका३ शिवहिं बिलोकि सशंकेउ मारू असूया ४ जिन्हहिं सोहाइन अवधबधावा५जगयो शंको मोहिं समाना श्रम६ द्वंद युद्ध देखहु सकल श्रमित भये अतिवीर आलस ७ रघुबर जाइशयन तब कीन्हा दीनता८आयानि दारुण दीनता कहेउ सबहि शिरनाइ चिंता ९ चिंता कव निहुं बातकर तात करिय जनि मोर मोह १० पुनः अति बिकल मोह मति नाठी स्मृति११सुधि न तात सीताकै पाई।धृति १२ सब प्रकार प्रभु पूरण कामा लाज १३ गुरुजन लाज समाज बड़ि देखि सीय सकुचानि अवेग १४ कह देखाय चह काह देखावा चपलता १५ मन्दिरते मन्दिर चढ़िधाई

जड़ता १६ मुनि मगमांझ अचल है वैसा हर्ष १७ जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हर्ष न जाइ कहि गर्व १८ भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं विषाद १६ राम राम रट बिकल भुआलू निद्रा २० तेइ सियराम साथरीसोये अमर्ष २१ कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठावों औत्सुक्य २२ वेग चलिय प्रभु आनिये भुजबल खलदल जीति अपस्मार २३ गइ मूर्च्छा, रामहिं सुमिरि नृप फिरि करवट लीन्ह स्वप्न २४ दिन प्रति देखहुं रात कुसपने बोध २५ बिगत निशा रघुनायक जागे उग्रता २६ जितेहु सुरासुर तब श्रमनांहीं नर बानर केहि लेखे माहीं॥ प्राण मगनता मग्न २७ राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत ज्ञान २८ उपजा ज्ञान वचन तब बोला व्याधि २६ देखी व्याधि असाधि नृप अवहित्था लाजते हर्ष शोक छिपे ३० तन सकोच मनपरम उछाहू।गूढ़प्रेम लखि परे न काहू॥ उन्माद ३१ लक्ष्मण समुझाये बहुभांती।पूछत चले लता तरु पांती॥त्रास ३२ भानिराश उपजी मनत्रास॥तर्क ३३ लंका निशिचर निकरनिवासा। इहांकहांसज्जन कर बासा इतिसंचारी॥ अथस्थायीलक्षण॥ स्थायी भाव बड़ोहै अरुरस स्वरूपको हेतुहै रति १ हांसी २ शोक ३ क्रोध ४ उत्साह ५ भय ६ ग्लानि ७ आश्चर्य ८ अरु अनुभाव विभाव संचारी ये सब जब थायी भावके अर्थ अनुकूल होइँगे तहां पूर्णतारसकी जानी जातु है। अरु शृंगार १ हास्य २ करुणा ३ रौद्र ४ बीर ५ भयानक ६ बीभत्स ७ अद्भुत ८ इतिनाटक मते नवमशांति रस ६ कोऊकवि मानतहैं तहांथायी निर्वेद अथ प्रथम शृंगार रसको देवता कृष्ण अरु बर्णहू कृष्णहै सो देवतनमों श्रेष्ठ यातें यह रसन मों येजोहै अरु सकल व्यभिचरियामों चरितार्थ होतुहै सो शृंगारद्वै प्रकार एक संयोग यथा सीतहि पहिराये प्रभुसादर॥ अरु दूसरो वियोग सो पांच प्रकार पूर्वानुराग १ यथा एककहहिं नृपसुततें आली॥ इहांले दरशलागि लोचन अकुलाने॥ इन्हींतक प्रवास २ कोमलचित कृपालरघुराई॥ अरु अहह नाथमोहिं निपट बिसारी इहां तक बिरह ३ यथा दुसह बिरहअब नहिं सहिजाई असूया ४ यथा शिव संकल्पकीन्ह मनमाहीं शाप ५ गौतम नारी शापबश उपलदेह धरिधीर। जहां मिलबेकी आश सो बियोग शृंगार अरु जहां न मिलबेकी सो करुणा अरु कहूं विभावना संचारी भाव न्यारेहूं रसप्रगटतुहैं परंतु पूर्णताबिलमो है अथ बिभाव करि रस यथा मृदुरधुनि चहुंदिशा सोहाई॥ इहांलों नवपल्लव भयबिटप अनेका इहां

तक अथ अनुभाव करि यथा माषे लषण कुटिल भइ भौंहैं संचारीही लिखो पूर्वहै भ्रम मूर्च्छा इत्यादि अथ हासरस २ जहां अयोग को योग उलटो काम अरु बुरो देखिबो अरु स्वर बाजा ऊंचो नीचो होबो हास्य के हेतु होतहै ब्रह्म देवता श्वेत रंग यथा शिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहनसब भागे ॥ अथ करुणा रस ३ मित्रको दुख मृतक शापै भाईबंधो दारिद्र रोदन कंपरोमखड़ो अनुभाव मोह मूर्च्छा दीनता संचारी सो काव्य अंग होइ तब करुणा रसं यम देवता कपोत रंग यथा मुख सुखाहिं लोचन श्रवहिं शोकन हृदयसमाइ॥मनहुं करुणरस कटक लेउतरी अवध बजाइ अथ रौद्ररस ४ गर्बतें बोलिबो शत्रु हथियार कढ़िबो देख क्रोधहोबो ये बिभाव टेढ़ोमोहै आखें लालहोंठ फरकबो ये अनुभाव गर्भ चपलता इत्यादि संचारी रुद्रदेवता अरुणरंग यथा जो शत शंकर करहिं सहाई। तदपि हतब रघुबीर दोहाई ॥टी०इहां इंद्रजीत बिभाव भुजादि फरकन अनुभाव गर्वसंचादि क्रोधथायी तातें रौद्र अथ बीररस ५ थायी उत्साह सो चार प्रकार युद्ध १ दान २ दया ३ धर्म्म ४ शत्रुका बल समर ये बिभाव अरु जो उग्रजीवहैं वचन उग्रबदन लाल अंग प्रफुल्लित अनुभाव गर्व उग्रता असूया संचारी इंद्र देवता पीत रंग समताकी सुधिलौ बीर समसुध भूलेतें रौद्र इनमोभेद इतनो यथा युद्ध बीर इतना कहत नीति रस भूला।रनरस बिटप पुलक मिसफूला॥दान बीर जो संपति शिव रावणहि दीन्ह दिये दशमाथ। सोई संपदा बिभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ॥दयाबीर और को दुःख देखि बिभाव वाको दूर करिबो अनुभाव गर्व धीरज संचारी यथा सुनि सेवक दुख दीन दयाला । फरकि उठी हैभुजा बिशाला ॥ धर्मबीर यथा शिविदधीचि बलि जो कछुभाखा । तन धन तजेउ वचनप्रणराखा॥अथ भयानकरस६भय विभाव कंपरोमांच प्रस्वेद अनुभावि मोह मूर्च्छा दीनता संचारीभाव बिष्णु देवता श्वेतरंग यथा डरपेगीध वचन सुनि काना। अथ वीभत्स रस ७ ग्लानि नि भाव निषिद्ध कादर्यको दीखबो अनुभाव निंदा करिबो रोम कंप दुःख असूयः संचारि महाकाल देवता नीलरंग यथा मज्जहिं भूत पिशाच बेताला अरु जनुवंशी खेलहि चितदये इहांतक अथ अद्भुत रस ८ आचार्य देखि अनहोनी विभाव वचन कंपरोमांच अनुभाव हर्ष डरमोह संचारी ब्रह्म देवता पीतरंग यथा देखरावा मातहि निज अद्भुतरूप । अखंड रोम रोम प्रति

लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड अथ शांतरस ९ सिद्धनकी मंडली तपोवन कथा संसार तुच्छयेविभाव समताज्ञान अनुभाव धीर्यहर्ष संचारी विष्णुदेवता श्वेतरंग यथा परिहर सकल भरोस रामहिं भजहिं ते चतुरनर अरु औरहू तीन रस गनायेहैं दास्य १ सख्य २ वात्सल्य ३ दास्य यथा चरण कमल चापत विधिनाना सख्य यथा सखानीति तुम नीक विचारी वात्सल्य यथा भइया कहहु कुशल दोउ बारे अथ रसनतें रस उत्पत्ति शृंगारतें हास्य करुणातें रौद्रवीरतें अद्भुत वीभत्सते भैय अथ शत्रु मित्र शृंगाररिपु वीभत्सबीर रिपुभय अद्भुत रिपुरौद्र करुणा रिपु हास्य अरु इनहीके विपरीत तें मित्रता जानो इतिरस ध्वनि अथ भावध्वनि संचारीतें व्यंग देवराज रत इनकी जहां प्रधानता होय तहां भावध्वनि अथ संचारी भावध्वनि यथा घनघमण्ड नभ गर्जत घोरा । प्रियाहीन डरपत मनमोरा ॥ अथदेव रति यथा प्रणवौं पवनकुमार खल बनपावक ज्ञान घन अथ राजरति यथा सुनहु महीपति मुकुट मणि तुम समधन्यन कोउ राम लषण जाकेतनय विश्व विभूषण दोउ ॥ अरु ऐसही मुनि पुत्र स्नेहतें भावध्वनि अथ रसाभास भावाभासरस अनुचिततें रसाभास अरु भाव अनुचिततें भावाभास अथ रसाभास यथा प्रभु लक्ष्मण पहँ बहुरि पठाई । अथ भासाभास यथा हृदय विचारति बारहिंबारा । कवन भांति लंकापति मारा ॥ टी० इह चिन्ता अनुचितहै अथ भावोदय यथा समाचार तेहि समय सुनि सीय उठी अकुलाय । जाइ तासु पदकमलयुग वंदि बैठि शिरनाय ॥ टी० इहां शंकाभावको उदय अथ भावसंधि यथा सकुचन कहि न सकत गुरुपाहीं । पितु दरशन लालच मनमाहीं ॥ टी० इहां लाज हर्षकी संधिहै अथभाव सबलतां दूतबचन रचना प्रियलागी । प्रेम प्रताप बीररसपागी ॥ अथभाव शान्ति यथा जनक लहेउ सुखशोच बिहाई । पैरत थके थाह जनु पाई ॥ टी० शंकाभावको शान्तिरस सबठौर प्रधान बड़ोहै अरु कहूं भावो गुरुता पावतहै जैसो सेवकके घर स्वामीजाय यथाशम्भु गये कुम्भज ऋषि पाहीं । इति असंलक्ष क्रमध्वनि॥शब्द अर्थदोऊते झांइसी प्रतीति व्यंग होतु तेहि साथहीं जहां क्रम ध्वनिअलंकारवस्तु व्यंग शब्दते शब्दध्वनि अथ शब्दते अलंकार यथा निशिचर अधम मलाय तन ताहि दीन्हनिजधाम।अरुइहां इन शब्दनके अर्थन व्याज स्तुति व्यंगहै यथा धर्महेतु अब तरेहु गोसाईं। मारेहु मोहिं व्याधकी नाईं ॥ अथ शब्दते विरोध भास व्यंग जहां शब्द

सों व्यंग होइ वस्तु सों वस्तु ध्वनि है यथा गुरु विवेकसागर जगजाना। तिनहिं विश्व कर बदर समाना॥ टी० गुरु विवेक सागर विश्वकर बदर शब्दनते व्यंग होतुहै कि ऐसो गुरुइनकी का कहिये ये बड़ो हैं यह वस्तु अथ अर्थ ध्वनि अर्थ शक्तिते बारह प्रकार स्वतः सम्भवीते वस्तु अलंकार चारिप्रकार अरु कविप्रौढोक्तितें चारि भांति अरु कवि निबद्धतें चारियों बारह भेद अथ वस्तु लक्षण ॥ सूधो कहना उततें अलंकार न ठहरे ताको वस्तु कहिये अथ स्वतः सम्भवी लक्षण। ख्यात अर्थते उचित व्यंगहोइ अथ स्वतः सम्भवी वस्तुततें वस्तु १ यथा शूरसमर करणीकरहिं कहि न जनावहिं आप। विद्यमानरण पाइ रिपु कायर करहिं प्रलाप टी० शूरको अपने मुख बड़ाई न करनो स्वतः बस्तु अरु कायरता जनाइबो परशुराम को दूसरो व्यंग अथ स्वतः सम्भवी बस्तुते अलंकार २ यथा तहां राम रघुवंश मणि सुनिय महा महिपाल। भंजेउ चाप प्रयास बिनु जिमिगज पंकजनाल टी० भंजिबो प्रयास बिनु बड़ाई वस्तुतें उत्प्रेक्षा व्यंगहै अथ अलंकारतें अलंकार ३ यथा देखा भरत बिशाल अति निशिचर मन अनुमानि। बिनु फरशायक मारेहु चाप श्रवण लगि तानि टी० अनुमानतें दूसरे विभावना व्यंग अथ अलंकारत बस्तु ४ यथाचंद किरण रस रसिक चकोरी रविरुख नयनसकै किमि जोरी। टी० इहां दृष्टान्त अलंकारनें सुकुमारता बस्तु अथकवि प्रौढोक्ति बस्तुतें वस्तु ५ यथा नवपल्लव फल सुमन सोहाये। निज संपति सुर रूखलजाये टी० सोहाइबो बस्तु दूसरी बस्तु व्यंगकविप्रौढोक्ति करसुर रूखको लजाइबो अथ बस्तुतें अलंकार ६ यथा लता भवनते प्रगटभे जेहि अवसर दोउभाइ। निकसे जनु युगविमल बिधुजलद पटलविल गाइ टी० लताते प्रगट होबो बस्तु करि उत्प्रेक्ष्या व्यंग युगशशि कवि कल्पित अथ अलंकारतें अलंकार ७ यथा आश्रम सागर शांतरस पूरणपा वनपाथ। सैनमनहुं करुणासरित लियेजात रघुनाथ टी० इहां रूपकतें उत्प्रेक्षा लंकार अथ अलंकारते बस्तु ८ यथा नृप भुजबल बिधुशिव धनु राहू॥गुरुअकठोर बिदित सबकाहू टी० समतद रूप रूपक करि कठोरता सूचित कराइबो बस्तु शशिराहु कवि कल्पित अथ कविनि बद्ध बस्तुते बस्तु ९ यथा चरण कमल बंदौं तिन्ह केरे। पूरहु सकल मनोरथ मेरे टी० बंदना बस्तुते मनोरथ पूरब वस्तु चरण कमल कवि निबद्ध अथ.

बस्तु ते अलंकार यथा शंभुप्रसाद सुमति हिय हुलसी। रामचरित मान-
स कवि तुलसी टी० इहां हुलसबो वस्तु रामचरित्र मानस रूपक व्यंग
अरु अलंकारतें अलंकार ११ यथा अरुण चरण पंकजमय जोती। कमल
दलन्ह बैठे जनु मोती टी० समरूपकते उत्प्रेक्षा व्यंग अथ अलंकार तें
बस्तु १२ यथा करि मुनि चरण सरोज प्रणामा। आयसुपाइ कीन्ह बि-
श्रामा टी० इहां मुनि चरण सरोज समरूपकालंकार आयसुपाइ बिश्राम
करिबो बस्तु अथ शब्दार्थमूल व्यंग शब्द अर्थ दोउ शक्ति मिल व्यंग
कढ़ै याहूको न भय शक्तिहू कहतहैं यथा कबितबिबेक एक नहिं मोरे। सत्य
कहौं लिखिकागजकोरे टी० इहां शब्दार्थ के चमत्कार तें अपनी नवनता
व्यंग अरु ध्वनिके ५१ भेद शुद्ध हैं और गनेते बहुत होत हैं सब भेदमों
संकर संसृष्ट बिस्तर भयानहीं लिख्यो इतिउत्तम काव्य अथ मध्यम
गुनी भूत व्यंग प्रकार ८ जहां बाच्यके चमत्कारते व्यंग प्रधान न होइ
अगूढ़ १ अरु अरूपरंगु२ तुल्य प्रधन ३॥ अस्फुट ४ काकु ५ बाच्य सिद्धां-
ग ६ संदिग्ध ७ असुन्दर ८ अथ अपरांगको अंगरसवत् अलंकार यथा
कृपा बारिधर रामखरारी। पाहि पाहि प्रणतार तिहारी। टी० इहां वीरको
अंगकरुणा रसहै सो राज रति भाव अंगहै अथ भावको अंगरस यथा श्री
रघुबीर प्रतापतें सिंधुतरे पाषान। तेंमतिमंद जेराम तजि भजहिं जाइ प्रभु
आन टी० इहां देव रति भावको अंग शांति रसहै अथ भाव अंग यथा
आवा कपि लंका जेहि जारी टी० बैरिनको चिंता राज रतिभाव अंगहै
अथ रसाभास उरजस अलंकार यथा कबिबल बिपुल सराहन लागा॥
टी० शत्रु बड़ाई करिबो अनुचित भावसो वीररस अंगहै अथ भावको अंग
भास भांगेभालु बली मुख यूथा टी० वीरको भागबो अनुचितभावको अंग
भाव शान्ति अथ समाहित अलंकार यथा बेतचाप आपुहि चढ़ि गयऊ।
परशुराम मन बिस्मय भयऊ टी० इहां गर्बकी शान्ति अथ भावको अंग
भाव उदय यथा रावणआवत सुनेउसकोहा। देवन्हतके मेरु गिरिखोहा॥
टी० त्रासको उदय अथ भावको अंग भावसंधि यथा दुहुं समाज हिय
हरष बिषादू टी० हर्ष बिषादकी संधि अथ भावको अंग भाव सबलता
यथा चले भाग कपि भालु भवानी। बिकल पुकारत आरत बानी॥ बि-
कलता आरत इन भावनको सबलताहै सो राजरतिको अंगहै अरु अर्थ-
हि बेइ बताइ सो बाच्य सिद्धांग व्यंग कहावै यथा असकस कहहु मान

मनऊना । सुख सुहाग तुम कहँ दिनदूना टी० इहां शब्द शक्ति बरि आक्षेपको पोषकहै अथ स्फुट व्यंग लक्षणा कबि मित्रहू कठिन सो लखै यथा चकृत चितयसुंदरी पहिचानी । हर्षविषाद हृदय अकुलानी टी० इहां कठिनताते व्यंग अधिक बिचारते किलकिंचितहाव अथ संदेही व्यंग यथा की मैनाक कि खगपति होई टी० इहां एक जाने बिना संदेह प्रधानते व्यंग अथ तुल्य प्रधान जहां वाच्य व्यंग बराबर यथा तोहि देखि शीतल भइ छाती । पुनि मोकहँ सोदिन सो राती टी० इहां दिनराति सो कहेते व्याकुलता ध्वनि वाच्य ध्वनि बराबरहै अथ काक पीछे कहि आये अथ असुंदर लक्षणध्वनिते बाच्यनिको होय यथा का बर्षा जब कृषी सुखाने।समय चूकि पुनिका पछताने टी० फेरचाप टूटे ऐसो समय मिलेगा व्यंगसो वाच्यतें सुन्दर नाहीं इति मध्यमकाव्य अथदोष लक्षण शब्द अर्थ के आधिक्यतासे रस न बूर्भपरै अंगनहीं न रसयतिभंग अर्थ अपार्थ बर्न प्रयोजन करन कटु पुनरुक्ति अंधबिरोधी बाधिर पंगुनगन मृतक और हूं दूषण के प्रभेद बहुत हैं ई रामचरित्र है सुहृदय मतिते दूषण नहीं है अथगुण लक्षण रसकी उत्कर्षता रचना सो गुण तीन भांति माधुर्य १ ओज २ प्रमाद ३ अथमाधुर्यज में कटुबर्णनहोइ मन रंजन करै यथा कंकण किंकिणिनूपुर धुनिसुनि अथ ओज जामों संयोगी अक्षर होइ अरु समासबडो यथा चिक्करहिं मर्कट भालु छलबल करहिं जेहि खलछीजहीं इत्यादि अथ प्रमाद जहां सुनतहीं अर्थ जानोजाय अरु सब गुणमों रहत है यथाज्ञानी तापसशूरकबि कोबिदगुण आगार । केहिके लोभ विडम्बना कीन्हन यह संसार॥अथ तीन वृत्ति गुणतेंहेतुहै उपनागरिका मधुरगुण १ पुरुषाङध्वत २कोमला प्रसाद युत ३ अथगुणालंकार को भेद कहतुहैं दूनोंते बडाई होतुहै अरु बिसरनहीं होत यामें गुणको अरु अलंकारको भेद कैसो जानै रसको बढ़ावै अनुप्रास उपमादिदै अलंकार शुभ अथ नायका जाति पद्मिनी अति सुकुमारी १ चित्रनी उपभोगनमों रुचिते २ शंखिनी दयारोष नाहींतें ३ हस्तिनी उदरभरि भोजन चावते ४ अथनायका भेद स्वीया स्वामीमो अनुरागतें १ परिकीया छिपाय परपुरुष अनुरागतें २ सामान्या धन लोभतें ३ अथ स्वीयात्रियामुग्धा अंकुरित यौवना १ मध्या समानलज्जा कामते २ प्रगल्भा केलिकला प्रवीण पतिमें ३ अथ मुग्धा भेदहै ज्ञात १अज्ञात २अरु नवोढ़ा लज्जा भयपराधीन रति

तें १ विश्रब्ध नवोढ़ा पतिमें कछु बिश्वासतें २ मध्या प्रगल्भामानवस्था मों तीन प्रकार धीरा व्यंगकोप प्रकाशका १ अधीरा कोप अव्यंग प्रकाशिका २ धीराधीर व्यंगाव्यंग कोप प्रकाशिका ३ अरु ज्येष्ठा कनिष्ठा अधिक न्यून प्रीतिते धीरादि भेदयहिमोंहोतहै अथ परकीया भेदकन्या अनब्याही परपुरुष अनुरागतें १ परोढ़ा जो परने विवाह लयो २ अथसुरथ गुप्ता तीन भूत १ भविष्य २ वर्तमान ३ तेविदग्धाहै वचना चातुरीते बचना विदग्धा १ रूपा चातुरीते रुपा विदग्धा २ लक्षिता लक्षणनामेते कुलटा जोचाहे बहुनायकने अनुसयनाके तीनभेद संकेतना बास होबेते १ संकेत नाशहोनिहार तें २ संकेतते नायकहै आयो आयनगई पछताय ३ मुदिता लक्षण नामेते इति अरु गणिका लक्षणपूर्व लिखि आयेहैं अथ साधारण नायकाभेद अन्य संभोग दुःखिता वक्रोक्तिगार्विताभेद प्रेमगर्बिता रूपगर्विता ता अरु मानवती भेद तीन लघुमध्यम गुरुमानते इनसबकेलक्षण नामेते प्रथमहि जो नायका कहि आयेहैं सो सब आठ प्रकारकी होती हैं और बिरहनी भेद तीन प्रोषित पतिका १ जाको कंत विदेश गयो प्रोक्ष्यत पतिका जाको पति बिदेश जायगो २ प्रोषित पतिका जाको पति बिदेशको चलतुहै ३ अरु आगत पतिका लक्षण नामेते यहूको कोऊ बिरहनी मानतुहै पै यहै नहीं खंडिता अन्योपभोग चिह्नित पति देखेते और कलहंतरिता अपमानकर पीछे पछताय विप्र लब्धासंकेतमें पति न मिलेते व्याकुलहोय उत्कण्ठता लक्षण नामेते बासकशय्या आजु हमारेपति आवेंगे जानि रति सामग्री ते व्यारकरेते स्वाधीन पतिका लक्षणनामेते अभिसारिका अपने जाय या पीय बोलायेते इति अष्टनायिका अथ उत्तमा मध्यमा अधमा नायका तीनोंकी लक्षणनामते अरु अभयदिव्यअदिव्य दिव्यादिव्यविचार लिखतु हों दिव्य इन्हानी आदिव्य नरतिय दिव्यादिव्यद्रौपदी आदि इन्हते भेद्र किये बहुत भेद होतहैं इति नायकासखी प्रीय नरमादि सिखावन धर्म दूती चुरहारिनि गोसाईनि आदि अथ नायकभेद पति १ उरपति २ वैसिक ३ इन्ह के लक्षण नामहि तेंसखा भेद चार पीठमर्द १ वीट २ चेटक ३ विदूषक ४ अथ दर्शन चारि भांति श्रवण १ प्रत्यक्ष २ चित्र ३ स्वप्न ४ इति नायक मिलायबो चारि भांति साम १ दाम २ दंड ३ बिभेद ४ अथ हाव दशप्रकार लक्षण तरुणिन के अंगनतें प्रगट जे भाव होतुहैं ताहीको हाव कहत हैं प्रथम लीला हाव लक्षण बोलनि चलनि चितवनिमों सब

भांति अनुरागकरै नायका १ बिलासल० पियदेखतमन हरबे की भावकरैर २ बिक्षिप्त लक्षण थोरा किये शृंगार पय शोभा अधिक होइ ३ बिभ्रम लक्षण नामहिते ४ किलकिंचितल उरहंसिरोमहर्ष एकैवारहोय ५ मोयइतल० पिय कथा मिलनकी सुन चाहहोइ ६ कुट्टुम्मितल० अधर उरजके शनिन को धरै भूठी रूखी होय हियमें सुख पावै ७ बिंबोकल० आये आदर न करै ललितल ० अंग अंग भूषण सोहै ९ विहितल ० लाजते न बोलि सकै १० अथ शब्दालंकार छेकानु प्रास यथा भये प्रगट रुपाला परमदयाला कौशल्या हितकारी अथ वृत्तानुप्रास एक बर्ण बहु यथा कहि जय जय जय रघुकुलकेतु अथ नाटानुप्रास एक पद बहुत बेरआवै यथा भवभंव विभव पराभवकारिनि वैदरभी गौनी पंचाली यहू रीति कचित्मतेहै अथ यमक एक शब्द द्वैबार आवै यथा भये बिदेह बिदेह बिशेषी अरु और यमकभेद चारों चरण अर्ध अर्धको अर्ध इत्यादि अथ अर्थालंकार जाको बरणय सो उपमेय जाको उपमादेइ सो उपमान समताकारक वाचक धर्म दूनों मो जोरहै चारोंहोइ तहां पूर्ण उपमा यथा तरुणअरुण अंबुजसम चरणा अरु एक द्वै तीन लुततें आठ भेद अथ बाचक लुप्ता यथा नव अंबुज अंबक छवि नीकी अथ बाचक धर्म लुप्ता यथा बिधु बदनी मृग शावकलोचनि अथ बाचकधर्म उपमान लुप्ता यथायूथ यूथ मिलि सुमुखि सुनैनी इत्यादि लुप्ता अथ अनन्वैःउपमेय उपमा एकयथा इनसमये उपमा उरआनी अथ उपमानोपमेय परस्पर लगे यथा रामकथामुनिबर्य्यबखानी । सुनी महेश परमसुखमानी ॥ ऋषिपूछीहरिभगतसोहाई । कहीशम्भुअधिकारीपाई ॥ अथ प्रतीय प्रकार पांच उपमानिको उपमेय करै यथा उतरि नहाये यमुन जल जो शरीरसम श्याम १ अथ उपमेयको उपमानते आदर न होय २ यथा नांघहिं खग अनेक बारीशा। शूर न होहिंते सुनु शठकीशा अथ उपमानको उपमेयते आदर न होय ३ यथा सियमुख समता पाव किमि चंद बापुरोरंक । अथ उपमा जहां समता न करै ४ यथा सीयबदनसमहिमकर नाहीं । अथ उपमान जहां वृथा होइ ५ यथा कोटिकाम उपमालघु सोऊ । अथ रूपकद्वै भांति एक तदरूप १ अभेद २ अधिक १ न्यून २ सम ३ दो उनके तीन तीन भेदे होतुहैं अथ अधिक तद्रूप यथा विषबारुणी बन्धु प्रियतेही । कहियरमासमाकिमिवैदेही ॥ अथन्यून तद्रूप यथा राममात्रलघु नाम हमारा । परशुसहित बड़नाम तुम्हारा ॥ अथसमतद्रूप यथा लषण

उत्तर आहुति सरिस इत्यादि अथ अधिक अभेद रूपक यथा नव बिधु बिमलतात यशतोरा । रघुबर किंकर कुमुद चकोरा ॥ उदितयदा अथइहि कबहूंना । घटिहि न जगनभ दिन दिनदूना ॥ अथ न्यून अभेद यथा । अति खलजे विषयीबककागा । अथ समभेद यथा । सम्पति चकई भरत चक मुनि आयसु खेल वार तेहि निशि आश्रम पिंजरा राखे भाभिनुसार ॥ अथ परिणाम उपमान रूपा करे उपमेयको यथा । मामवलोकय पंकज लोचन । अथ उल्लेष हैभांति बहुतकै एकै उल्लेष यथा । रहेअसुर छल छोनि प्रवेशा । तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥ पुरबासिन देखे दोउ भाई । नर भूषण लोचन सुखदाई ॥ दूसरो यथा । जय रघुबंश बनजवन भानू । गहन दनुज कुल दहन कृशानू ॥ अथ सुमरिन १ भ्रम २ संदेह इनको नामे ते लक्षण सुमरिन यथा । सियमुख सरिस देखि सुख पावा । भ्रम यथाबहुरि आय देखा सुत सोई । हृदयकम्प मन धीरन होई ॥ संदेह यथा । कोतम तीन देव महँ कोई । नर नारायणकी तुम दोई ॥ अथ शुद्धापह्नुति और की आरोप करि सांचो धर्म छिपावै बन्धुन होय मोर यहकाला । अथहेता पह्नुति युकिते छिपावे वस्तु यथा देखियत प्रगट गंगन अंगारा । अवनिन आवत एकौतारा ॥ अथ परजस्तापह्नुतिआनकेगुण आन में आरोपै यथा मुकुट न होहिं भूप गुणचारी । अथ भ्राता पह्नुति भ्रम दूरकरै यथा कह प्रभु हंसि जनि हृदय डेराहू । लूकानि अशनिकेतुनहिंराहू ॥ येकिरीटदश-कंधर केरे । आवत बालि तनयकेप्रेरे ॥ अथ छेकापह्नुतियुक्तिसों जहांबात दुरावै परसों यथा कछु न परीक्षा लीन्ह गोसाईं । कीन्हप्रणाम तुम्हारिहि नाईं ॥ अथ कैत वापह्नुति एकको बनाकरि बर्णै आन यथा लखी नरेश बात सबै सांची । तिय मिसुमीचु शीशपर नाची ॥ अथ उत्प्रेक्षा संभावना भ्रांति बिन बस्तुहेतु फल ३ अथ बस्तुते २ यथा छत्रमेघडम्बर शिरधारी सो जनु जलद घटा अतिकारी ॥ हेतुते २ यथा प्रभु कहं गरल बन्धुशशि केरा । अति प्रिय निज उरदीन्ह बसेरा ॥ फलते ३ यथा चारु चरणनख लेखति धरनी । नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी ॥ मनहु प्रेमबश बिनती करहीं । हमहिं सीयपद जनि परि हरहीं ॥ अथ अति शयोक्ति रूपक, जहां उपमानतें । उपमेय प्रगटै यथा सिरस सुमन कत बेधइ हीरा अथ अपह्नोक्ति और को गुन और पर ठहरावै यथा तव मूरति विधुउर बसत सोइ श्यामताभास अथ भेदकांति औरै पद जहांहोय यथा महिसरिसागर

सर गिरि नाना। सब प्रपंचहै तहँ आनै आना॥ अथ सम्बन्धातिशयोक्ति योग को योगता देइ यथा धवल धाम ऊपर नभ चुम्बत।अथ दूसरोवाके विपरीत यथा नवपल्लव फल सुमन सुहाये। निज संपति सुररूखलजाये॥ अथ क्रमातिशयोक्ति कारणकारजु संगमोंहोय यथा संधानेउ प्रभु विशिख कराला।उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला॥अथ चपलातिशयोक्ति कारण तें होतु नामै काज यथा बिमल कथाकर कीन्हअरम्भा। सुनत नशाइकाम मद दम्भा। अथ अत्यन्तातिशयोक्ति पूर्वा पर क्रम नाहीं यथा कह कपि मुनि गुरु दक्षिणालेहू। पाछे हमहिं मंत्र तुमदेहू॥अथ त्रिविधतुल्ययोगता सम सभाव हित अहित यथा निन्दा स्तुति उभय सम इत्यादिं दूसरोबहु मों एकैबात यथागति विलोकि खगनायक लाजे। तीसरो बहुसो समता गुनकरि यथा प्रभु समरथ सर्वज्ञ शिव सकलकला गुणधाम।योग ज्ञान वैराग्य निधि प्रणत कल्पतरु नाम। अथ दीपक निज गुणन तें वर्णे इतर यथा भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच। अरु शब्दअर्थ दूनोंके फिरे ते तीन अथ प्रथम शब्द वृत्ति यथा हे बिधि मिलै कवन बिधि बाला॥अथ अर्थावृत्ति यथा कूजहिं कोकिल गुंजहिं भृंगा। अथ पदार्थावृत्ति यथा राम साधु तुम साधु सयाने।अथ प्रतिबस्तु उपमा जहँ दूनों वाक्य बराबर यथा राजन राम अतुल बल जैसें।तेज निधान लषण पुनि तैसे॥अथ दृष्टान्तालंकार जहां बिंबप्रतिबिंबहोय यथा उभय बीच सियसोहति कैसी। ब्रह्म जीवबिच मायाजैसी।अथत्रिविधनि दर्शना प्रथम जहां वाक्य अर्थ दोनों सम यथा संतहंसगुन गहहिं पय परिहर बाह्य विकार।दूसरो आनमों आन बस्तु आरोपै यथा असकहि फिरचितये तिहि ओरा। सिय मुख शशि भे नयन चकोरा॥ तीसरो कारज देखभलो बुरो फल कहै यथारामानुज लघुरेखखिचाई।सो उनहिं नांघेउ अस मनुसाई॥ अथ सहोक्ति सबएकै साथ बरनै यथा बल प्रताप वीरता बडाई। नाकपिनाकहि संग सिधाई॥ अथ व्यतीक गुन दायगनि समता तजि एक व्यंग बरनै यथा काल कूट मुख पय मुख नाहीं।अथ द्विविध बिनोक्ति नीक बानि काम कछु दुरावै नहीं यथा राम कहा सब कौशिक पाहीं। सरल सुभाव छुवाछल नाहीं॥ दूसरो यथा बिधुवदनीसबभांति सवांरी। सोहनबसन बिनावरनारी॥अथ समासोक्ति जहां प्रस्तुतमें अप्रस्तुत को ज्ञान होय यथा शूरसमर करनी करहिं कहिन जनावहिं आप। अथ परि कर विशेपनमों अभिप्राय यथा-

पति देवता सुतीय महँ मातु प्रथम तव रेख । अथ परिकरांकुर साभिप्राय बिशेष जहाँ यथा गुनहु लषण कर हम पर रोषू।अथ श्लेष बहुत अर्थ एक शब्दमों होय यथा साधु चरित शुभ चरित कपासू। निरस बिशद गुनमय फल जासू॥अथ अप्रस्तुत प्रशंसासो द्वै प्रकार एकवरणप्रस्तुति दूसरो प्रस्तुति अंश प्रथम यथा चहुं युग तीन काल तिहुँ लोका । भये नाम जपि जीव विशोका॥ दूजो यथा कबिकोबिद अस हृदय बिचारी। गावहिं हरि जस कलिमल हारी॥ अथप्रजा उक्तिके द्वै भेदबात रचनाते कहे अरु मन भावतोकाम वहानेतेंसाधिबोप्रथम यथातिन्हकहँकहिय नाथ किमिचीन्हें। देखिय रविकि दीप करलीन्हें ॥दूसरो यथा लषण हृदय लालसा बिशेखी। जाइ जनक पुर आइयदेखी॥अथ व्याजस्तुति मिस निंदा यथा कोटि बिप्र बध लागहिंजाहू । आयेशरण तजों नहिं ताहू॥अथ व्याजनिंदा निंदा मिस बड़ाई यथा जननी तूजननी भई बिधिसन कछु न बसाय । अथ आक्षेप तीन प्रकार एक निषेधाभास गुण दोष समतातें दूसरो पहले आप कहे पुनि वाको फेरेतीसरे निषेधको बिधिबचनते छिपावै प्रथम यथा राम करहु सबसंयम आजू । जो बिधि कुशल निबाहइ काजू ॥ दूसरो यथायदपि कवित रस एकौनाहीं। रामप्रताप प्रगटाहिय माहीं॥ तीसरो राजदेन कहि दीन्हबन.मोहिं न शोच दुखलेश। तुमबिनु भरतहिं भूपतेहिं प्रजहिं प्रचंड कलेश ॥ अथ बिरोधाभास नामलक्षण यथा धूरिमेरु सम जनु कयम ताहि व्यालसम दाम। अथ बिभावना षट्प्रकार बिनाकारनैका रैजहोइ १ यथा आननरहित सकलरसभांगो । दूसरोहेतु अपूरणतेकारज पूरणहोय २ यथा काम कुसुम धनु सायक लीन्हें। सकल भुवन अपनेबश कीन्हें॥ तीसरांप्रतिबंधक यद्यपि तऊ कारजकी पूरता३ यथा रखवारे हति बिपिनउजारा॥ देखत तोहि अछे तेहि मारा ॥ चौथो अहेतु तें काज होय. ४ यथा भयउ तात निशिचरकुल भूषण।पांचवों कौनो कारणतें काजविरुद्ध ५ यथा जेहि तरु रहीं करत सो पीरा छठयों काहू काजतें कारनहोय यथा शंभु बिरंचि बिष्णु भगवाना । उपजहिं जासु अंशतें नाना ॥ अथ विशेषोक्ति कारणहोते काज न होय यथा तमकि ताकि तकि शिव धनु धरहीं। उठइ न कोटि भांति बल करहीं ॥ अथ असम्भावना अनहोवे लायक कारज कहे फल सिद्धितें यथा हृदय बिचारत बारहिबारा।काज अरु कारन न्यारे जहां होइ १ और ठौर करे और ठौरको काम २ हितकरते अहितको

मनुज मोहिं भाये । अरु तिन्हमहँ निगम धर्म अनुसारी ॥ इत्यादि अथ न्यूनसार यथा एक मंद मैं मोहबश कुटिलहृदय अज्ञान । पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ दीनबंधु भगवान ॥ अथ यथासंख्यबरणन बिषे वस्तु अनुक्रमतें यथा बंदौं रामनाम रघुबरको । हेतुकृशानु भानु हिमकरको ॥ अथ द्विविध पर्याय अनेक को क्रम तें आश्रय एक २ पुनः एकको आश्रय अनेक प्रथम यथा जनक लहेउ सुखशोचबिहाई । दूसरो यथा नाम अनंत अनंत गुण अमित कथा बिस्तार । अथ प्रवृत्ति कछु कछुको बदलनो यथा तारा बिकलदेखि रघुराया । दीन्हज्ञान हरलीन्हीमाया ॥ अथ परसंख्याएकठौर बरजिके दूसरेठौर ठहरे यथा मणिमुक्तामाणिक छबिजैसी । अहिगिरिगज शिरसोहन तैसी ॥ नृपकिरीट तरुणीतनपाई । लहहिं सकल शोभा अधिकाई ॥ अथ बिकल्प यहहै कि वह यथा की तनप्राण कि केवलप्राना । अथ द्विविध समुच्चय भावबहुत एकठौर गूंथेहोइ १ एक काज चाहै अनेक अंग होय २ प्रथम यथा चकृत चितव मुँदरी पहिंचानी । हर्ष बिषादहृदय अकुलानी ॥ दूसर यथा अब मैं कुशल मिटे भयभारे । देखि राम पद कमल तुम्हारे ॥ अथ कारक दीपक एकमों क्रमतें अनेकभाव यथा बारबार मुख चुंबति माता । नयन नेह जल पुलकित गाता ॥ अथ समाधि और हेतु मिल कारज सुगम होइ यथा वचन सुनत कपि मन मुसुकाना । भई सहाय शारद मैं जाना ॥ अथ काव्यार्थ प्रति यह कियो वहक्या यथा जितेउ सुरासुर तब श्रम नाहीं । नर बानर केहिलेखे माहीं ॥ अथकाव्य लिंग युक्तितें अर्थ समर्थन होय यथा सो नर क्यों दशकंध बालिबध्यो जेहि एकशर । अथ अर्थान्तरन्यास समान विशेष दृढतें यथा राम एकतापस तिय तारी । इहांते नाम प्रसाद शोच नहिं सपने । इहांलों अथ विकस्वर जहां विशेषहोय पुनि समान विशेष यथा सुमिरि पवनसुत पावननामू । अपने बशकर राखेउ रामू ॥ अपत अजामिल गज गणिकाऊ । भयेमुक्त हरिनाम प्रभाऊ । अथ प्रौढोक्ति वर्णन में अधिकाई अधिकार यथा कामकलभ करि भुज बल सींवां अथ सम्भावना ज्यों ऐसा होइ तो ऐसा होय यथा जो छबि सुधा पयोनिधि होई । यह प्रसंगभर अथ मिथ्या यों सित भूठहिं कथे भूठी रीति यथा बारिमथे घृतहोइ वरु सिकताते बरुतेल । अथ ललित जो कहा चाहै ताहीको प्रति बिम्ब यथा पिय तुम नाहिं जितव संग्रामा । जाकेदूतकेर यह कामा ॥ अथ

त्रिविध प्रहर्षण विनु यतन इच्छाफल.होइ १ इच्छातें अधिकफल विना श्रम मिलै २ याको यतन सीधे सो हाथ मिलै २ प्रथम यथा चितवत पंथ रहेउँदिनराती । अबप्रभु देखिजुडानीछाती ॥ दूसरो यथा धरहुधीर होइहि सुत चारी । त्रिभुवन विदित भक्त भय हारी ॥ अथ तीसरो एहि विधिमन विचारकर राजा । आइगये कपि सहित समाजा ॥ अथ विषाद चितचाह ते उलटा जो होय यथा लिखत सुधाकरगा लिखि राहू । उल्लास-गुण औगुण.औरको और भये यथा परदुख दुख सुख सुख देख पर । अथ अव ज्ञा और को गुण दोष न लगै यथा ऊपर बरषै तृण नहिं जामा।अथ लेस गुणमों दोप देखे १ दोषमों गुण देखे २ यथा मोहिं दीन्ह सुख सुयश सु-राजू।कीन्हकैकई सबकर काजू॥दूसरो.यथा जोनहिंहोत मोह अतिमोहीं। मिलतेउं तात कवन विधि तोहीं।।अथ अनुकै दोषै गुणमाने यथा रामहिं चितव सुरेश सुजाना।गौतम शांप परम हित माना ॥ अथ मुद्रा प्रस्तुत पद विषै औरै अर्थ प्रकाशै यथा पूछेउ गुनिनरेखतिन्हखांची। भरतभुआल होहिं यह सांची॥अथ रत्नावली प्रस्तुत विषय और नामक्रमतें यथा बहुरि बच्छ कहि लाल कहि रघुपति रघुवर तात। अथ तद्गुण आपनो गुण छोड़. और को लेइ यथा धर्मौं तजै सहज करुआई ॥ अगरु प्रसंग सुगन्ध बसाई अथ पूर्व रूप द्विविध संगतिको गुण लेइ तजि पुनः .अपनो गुण लेइ १ जहां गुण न मिटै यतन हूं किये ते २ प्रथम यथा खल उबरहिंभल पाइ सुसंगू । मिटइन मलिन सुभाव अभंगू ॥ दूसरो यथा राकापति षोड़श उअहिंतारागण समुदाय।सकल गिरिन्ह दवलाइ अबिनु रविराति न जाय॥अथ अतद्गुन आनके संगहु गुनलेइन आनको यथा बायस पालहिं अति अनुरागा । होहिं निरामिष कबहुं कि कागा ॥ अथ अन्य गुन अपनो गुन औरके संग बढ़ावै यथा मज्जन फल देखिय ततकाला । काकहोहिं पिकवकउ मराला ॥ अथ मिलित सम तीसे दूजो न लखाइ यथा बेनु हरित मनिमय सब कीन्हें । सरल स पर्ब परहिं नहिं चीन्हें ॥ अथ समान भिन्नो रूपसों विशेषन पाइये यथा राम लषण सखि होहिं कि नाहीं । अथ उनमिलत सादृश्यते भेद कैसो खुलै यथा वयवपु वरनरूप सोइ आली । शील सनेह सरिस सम चाली ॥ वे पुनिसो सखि सीयन संगा । आगे चली अनी चतुरंगा अथ गूढ़ोक्ति अभिप्राय से उत्तर देय यथा अब कहु कुशल बालि कहं अहई।बिहंसि वचनतब अंगदकहई॥

दिन दश गये बालिपहं जाई । बूझेउ कुशल सखा उर लाई ॥ अथ प्रश्नोत्तर प्रश्नउत्तर जामों होय यथा कह दशकंठ कवन तैं बंदर। मैं रघुबीर दूत दशकंधर॥अथ बिन प्रश्न उत्तर एकपद में होय यथा काबर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनिका पछताने॥ अथ सूक्ष्म कवनोभाव ते मनकी बात जाने यथा सीतहि सभय देखि रघुराई । कहा अनुजसन सैन बुझाई ॥ अथ पिहित छिपी बात बतायदेइ यथा अंगद नाम बालि करबेटा। तासों कबहुंकि भईहि भेंटा॥ अथव्याजोक्ति आकार छिपाय और बिधि कहै यथा जिन्हहिं बिरचि बड़भयउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता ॥ अथ गूढोक्ति औरके बहाने औरको उपदेश करै यथा बहुरि गौरिकर ध्यान करेहू। भूप किशोर देखि किनलेहू ॥ अथ विघ्नोक्ति श्लेषमों छिभैको प्रकाश करै यथा प्रीति बिरोध समानसन करिय नीति अस आहि । जो मृगपति वधि मंडुकनि भलकि कहै कोउ ताहि॥ अथ युक्ति क्रियाकरि बरण छिपावै यथा बहुरि बदन बिधु अंचल ढांकी । पियतन चितइ भौंहकरि बांकी ॥ खंजन मंजु तिरीछे नैननि। निज पति कहेउ तिन्हहिं सिय सैनानि ॥ अथ लोकोक्ति कछु वचनते प्रवाद । लेइ यथा मास दिवसमहँनाथनआवा। तौ पुनि मोहिं जियतनहिं पावा ॥ वक्रोक्ति सूधी बातमों टेढ़ो भाव यथा मैं सुकुमार नाथ बनयोगू। तुमहिं उचित तप मोकहं भोगू ॥ अथ सुभावोक्ति जहां सुभाव बरनो जाइ भोजन करत चपल चित इत उत अंवसर पाइ। भागि चले किलकात मुख दधि ओदन लपटाइ॥अथ भाविक भूत भविष्यादि जहां प्रत्यक्ष लखाय यथा भयउ न अहइ न अब होनिहारा। भूप भरत जस पिता तुम्हारा॥ अथ उदात अंथ लक्षण अधिकारीदै सोधिये यथा बालि न कबहुं गाल अस मारा। मिलि तपसिन तैं भयउ लबारा॥अ. अत्युक्ति बहुतबढ़ायकै कहै यथा जो सम्पदा नीच गृह सोहा।सो बिलोकि सुरनायक मोहा॥अथ निरुक्ति जहां योगतें नामको औरै अर्थ कल्पे यथा नाम तुम्हारं प्रताप दिनेशा।सत्यकेतु तव पिता नरेशा॥अथ प्रतिषेध जहां निषेध को बखाने यथा मुकुट न होहिं भूपगुण चारी॥अथ बिधि फेरकैअर्थ साधै यथा याको फल पावहुगे आगे। बानर भालु चपेटन लागे॥अथ हेतु द्विबिध कारज कारण एक संगै होइ कारण कारज वस्तु एकै २ प्रथम यथा उयउ अरुण अवलोकहु ताता।पंकज कोक लोक सुख दाता॥दूसरो

तीन हे तीन पांच तीन पांच आठ ऐसो क्रमतें पुनः पूछे अंक को अन्त अंक मों घटाइ के जो उबरै जाको और अंक लिखे यों घटाइ के ताके नीचे अगली कलाले के गुरु करै जैसे सप्तकलामों दाम्मों भेद प्रश्न ताको उत्तर यथा अथ मात्रा उद्दिष्ट लिखकर पूछे तापर दूनों अंक धरै लघुके माथे पर अरु गुरु के ऊपर नीचे गुरु माथे को अंक जोरि के अन्त के

१	२	३	५	८	१३	२१
।	।	ऽ		ऽ		।
।	।		ऽ			

अंक मों घटावै जो बचै सो भेद कहै यथा अथ मात्रा मेरु प्रयोजन जो जानो चाहै कि इतने के प्रस्तार में कै इक गुरु के दो गुरु के तिगुरु के परैं है इत्यादि प्र-

१	२	३	८	२१
।	।	ऽ	ऽ	।
	५		१३	

दशयो भेद

स्थ हेतु मेरु है ताके लक्षण प्रथम द्वै द्वै कोठा बनावै बराबर तब अन्त में कोठन मों एक अंक लिखि आवै अरु आदि कोठैन मों एक एक कोठा छोड़ि देइ के एक एक अंक लिख आवै एक एक के खाली मों द्वै से गिनती लिखै तब जो खाली कोठा है तामों अंक धरै या क्रम ते कि माथे पर के अंक ताके माथे को पर अंक लेइ के दूनो जोरि भूरि देइ ॥ पूरन अरु खराड मे रूकी खचाइवे मों भेद है अंक रीति एके है अथ मात्रा मेरु रूप यथा अथ मात्रा पताका प्रयोजन के प्रस्तार में इक गुरु द्विगुरु तिगुरादि कोघे कोये स्थान पर रहै ता हेतु है नांकलछन जै कला को पताका बनायो चाहै तैई कला को मेरु कै कोखंड अलग कर कै ताही संख्या ते कोठा बनावै तब प्रथमें उद्दिष्ट अंक की रीति ऊपर के कोठा भरि आवै तब अंत अंक अंत के कोठा को तातें एक एक घटाके एक गुरु पंक्ति दुइ दुइ अंक से घटै सो दुगुरु पंक्ति

२	१	१			२
३	२	१			३
४	१	३	१		५
५	२	४	१		८
६	१	६	५	१	१३
७	५	१०	६	१	२१
	गु॰३	गु॰२	गु॰१	ल॰	

मो लिखे यही रीति तें जहां लौं चाहै अथ मात्रा रूप पताका यथा अथ मात्रा मर्कटी प्रयोजन जो पूछे इतने प्रस्तार मों कितने वृत्ति भेद मात्रा बरन लघु गुरु हैं ताके हेतु है ताके लछन छ पंक्ति कोठा खड़ा लिये पुन वृत्ति भेद मात्रा बरण लघु गुरु क्रम सें कोठा के बाहर लिखै पुनः आदि कोठन एक एक लिखि आइ गुरु ढिग शून्य लिखे फिर चौड़ाई वृत्ति कोठन मों दुइ आदि गनती अंक भरै

१	३	८	२१
२	२५	१३	
४	६	२६	
८	७	१८	
गु·३	१०	१९	
	११	२०	
	१२		
	१४		
	१५		
	१७		
	गुरु		

अरु भेदकोष्टन में उदिष्ट अंक भरे पुनः द्दति भेद गुरु क·रि मात्रा पंगति मों भरे पुनः लघु पंक्ति में जो स्क अंक है सो गुरु पंक्ति शून्य के आगे लिखें ताही को मात्रा पंक्ति में घटाय बाकी वरण कोठा में भरे सोई वरन पंक्ति में घटाय बाकी लघु पंक्ति मो भरे पुनः ताही को गुरु पंक्ति में आन के घटायबो याही रीति से जितनो चाहे तितनो बनावे अथ मात्रा मर्कटी सम काल को य·था अथ मात्रा सूची प्रयोजन को पूछे प्रस्तार मों कि कितने भेद परल घु लघु गुरु अंत है ताके हेतु है ताके लक्षण जितने अंक पर प्रस्तार को अन्त है ताके पाछे को अंत लघु अंत ताके पाछे को अंक गुरु अंत सूची यथा वरण द्दति नष्ट पूछे की आधा करै सम आवे तो लघु ले आवै पिषम आवै तो गुरु लिषि स्क मिलाय भागि ऐसही क्रम तें करते जाय यथा पांच वरण प्रस्तार भेद तेरहां नष्ट

गुरु	१ २ ३ ५ ८ १३ १२	लि-
लिषि	गु· अ·ल· अं·	रि

द्दति	१	२	३	४	५	६	७
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१
मात्रा	१	४	६	२०	४०	७८	१४८
वरन	१	३	७	१५	३०	५८	१०८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१
गुरु	०	१	२	५	१०	२	३८

अथ उदिष्ट वरण द्दति को जो पूछै लिख के तापर दूने दूने क्रम तें अंक धरे

१	२	४	८	१६	३२
ऽऽ	॥	ऽ			

जैसो जो अंक लघु शिर पर होइ ताको जोरि के और स्क मिलाइ के जितना होइ सोइ भेद जानो यथा वरण में रूप लक्षण प्रथम है कोठा पुनः वारि ऐसी रीति से बनावै तब आदि अन्त के कोठन में स्क स्क अंक लिख आवे तब माथे के अंक ते अंक जोरि जोरि के खाली कोठा भरे यथा अथ वरण पताका लक्षण प्रथमै उदिष्ट के सभा वरण मे रून अंक धरि आवे

				२	१	१	१
४०				१	२	१	२
८			१	३	३	५	३
	१६	१	४	६	४	१	४
३२	१	५	१०	१०	५	१	५

गु·५ गु·४ गु·३ गु·२ गु·१ लं·

१	२	४	८	१६
ऽ·ऽ·॥				ऽ

पुनः पूरब के अंक लेइ के भरे पर अंक ते अरु आयो अंक न आवे अथ वरण पताका यथा अथ वरण मर्कटी लक्षण छह कोठा बनावे आदि मों क्रम तें अंक स्क है तीन चारि इत्यादि दूसरे मों उदिष्ट रीति अरु पहले कोठा में दूसरे तें गुन करिकै·

चौथे कोठा मों भरे तब चौथे कोठा के आधा पंचयें छठे से कोठा मों लिखदेइ तब पांचयें अरु चौथे कोठा तें जोरि कै तीसरा मों अंक धरिदेइ यथा अथ वरण सूची लक्षण जितने अंक पर प्रस्तार को अन्त होत है ताके आधे पर गुरु अंत तितनोई लघु अन्त है ॥

	२	४	८	१६	३२
गु॰५	३	६	१२	२४	ल॰
	५	७	१४	२८	
यथा	९	१०	१५	३०	
भाग	१७	११	२०	३१	
न२		१३	२२		
गु४		१८	२३		
भ६५७		१९	२६		
लोग और		२१	२७		
अघ छंद		२५	२९		
		गु३	गु२		

अथदश आठ हर घ३श४ख५ गु२ २८ और कवि हूं धरे हैं ॥

छ॰	१	२	३	४	५	६	७.
भे॰	२	४	८	१६	३२	६४	१२८
मा॰	३	१३	३६	९६	२४	५७६	१३४४
व॰	२	८	२४	५७	१६०	३८४	८९६
ल॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८
गु॰	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८

रीति। श्री गोसांई तुलसीदास जू या रामायण मों१३ प्रकारके छंदकहे हैं तिनहीं कों लक्षण लिखतु हैं तेरह छंद मोंनाना वृत्तिके ६ प्रकार अरु वरण वृत्ति के सात प्रकार अथ मात्रा वृत्ति छंद लक्षण प्रथम दोहा लक्षण प्रथम तुक तेरह मात्रा को दूसरा ग्यारह ऐसेई पुनः तेरह ग्यारह करै तुक चार लौं यथा बोले बंदी बचन वर सुनहु सकल महिपाल प्रण विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाय विशाल १ अरु दोहा के तेरहन मों एक एक कला घटाये ते दोहरा छन्द होत है अरु द्वै द्वै बढ़ाये तें दोही होतु है यथा तात चरण गहि मांगौं राखहु मोर दुलार। सीता देहु राम

१२४८	गु॰ अं॰ १६ लघु॰ अं॰	३२

कहं अहितन होइ तुम्हार ॥ अरु कहूं कहूं दोहा मों कला एक घट बढ़ होतु है पाद-अन्त बिकल्प करि घट यथा सुनत बिनीत बचन अति कह कृपालु मुसकाय। जेहि बिधि उतरै कपि कटक तात सो करहु उपाय। अथ घट यथा रे नृप बालक काल बश बोलत तोहिं न संभार। धनुहीं सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार ॥ अथ सोरठा लक्षण ॥ दोहा को उलटी पढ़े ग्यारह तेरह करि सोरठा होतु है यथा भरत कमल कर जोरि धीर धुरंधर धीर धरि बचन अमिय जनु बोरि ॥-

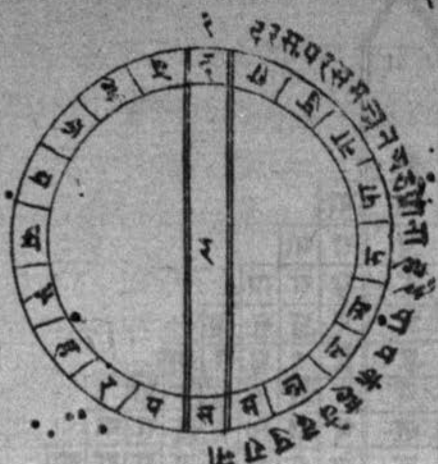
देतउचित उत्तर सबहिं २ अथ रूप चौपाई लक्षण रूप चौपाई सोरह १६ कला की मात्रा ॥ जबतें राम व्याह घर आये नित नव मंगल मोद बधाये ताही में विद्युन्मालाच पक माला पादाकुलिक भ्रमर बिलसतादि सब होतु हैं एक घटाय पन्द्रह १५ मात्रा की मैं आदि चौपाई हँसी उज्ज्वलादि नाम होत हैं एक बढ़ाय १७ सत्रह की मैं धारी वाक्यादि नाम होत हैं ३ अथ त्रिभंगी छंद लक्षण प्रथम यथा दस मात्रा पर विश्राम फेर आठ पर पुनः छः मात्रा पर यथा पर सत पद पावन १० शोकन शावन ८ प्रगट भई तप ८ पुंजसही ६।४। अथ चौपइया छंद लक्षण दश मात्रा प्रथम पुनः आठ पुनः बारह सब कला ३० यथा भये प्रगट कृपाला १० परम दयाला ८ कौशल्या हितकारी १२ इत्यादि अथ हरिगीत छंद लक्षण अंत गुरु सब मिलि मात्रा अट्ठाईस २८ को यथा मन जाहि ५ राचो मिलिहिं ७ सो वर ४ सहज ३ सुंदर ४ सांवरो ५॥ ६॥ इत्यादि अथ वरण छंद लक्षण अथ मगन स्वरूपनी आठ अक्षर लघु गुरु क्रम ते यथा नमामि भक्त वत्सलं कृपाल शील कोमलं १ इत्यादि अथ तोमर छंद लक्षण सगन एक जगन द्वै नव अक्षर को रूप ॥ऽ।ऽ॥ऽ। यथा महिमा उदार अपार २ इत्यादि ॥ अथ तोटक छंद लक्षण चारि सगन बारह अक्षर को ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यथा जयराम सदा सुखधाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे ३ अथ भुजंग प्रयात लक्षण ॥ चारि मगन बारह अक्षर को।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यथा नमामी शमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेद स्वरूपं ॥ ४ ॥ इत्यादि॥ अथ अनुष्टुप लक्षण ॥ पंचवां वरण लघु चारों चरण मों छठयां गुरु सत मो लघु नेम दूसरो चौथे चरण मों पहले तीसरे चरण मों सतया गुरु अक्षर आठ यथा योददाति सतांशंभुः कैवल्यमपि दुर्लभं खलानां दंड कृद्यो सौ शंकरः शंतनोतु मे ५ अथ शार्दूल विक्रीडित लक्षण प्रथम मगन सगन जगन सगन तगन द्वै अंत मों अंत एक गुरु अक्षर १९ को ऽऽऽ॥ऽ।ऽ॥।ऽऽ।ऽऽ।ऽ यथा शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाण शांति प्रदं ब्रह्मा शंभु फणींद्र सेव्य मनिशं वेदांत वेद्यं विभुं॥ रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं माया मनुष्यं हरिं वंदेहं करुणाकरं

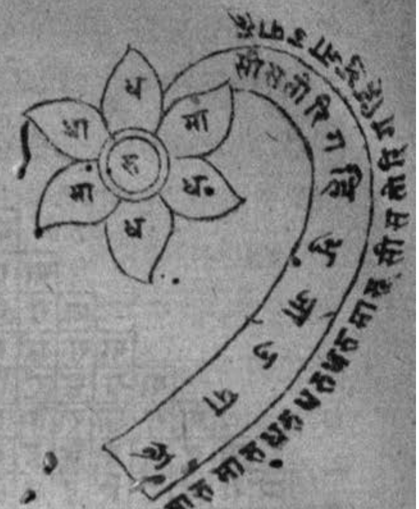
रघुवरं भूपाल चूडामरिंा ६ अथ वसंत तिलक लक्षरा तगन भगन जगन हैं गुरु हैं अन्त मों अक्षर चौदह ऽऽ।ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽऽ यथा नान्या स्पृहा रघुपते हृदये स्मदीये सत्यं वदामि च भवान खिलांतरात्मा ७ इत्यादि इति पिंगल मत ॥ अथ चित्र ॥ चित्रको भेद बहुत है कछु या रामायरा के भेद चित्र उदाहरण देखावत हौं ॥ चित्र मों प्रथम निरोष्ठ जामें ओष्ठ न लगे यथा अग जग जीव नाग नर देवा नाथ सकल जग काल कलेवा अथ अंतरलापिका जाको अर्थ छन्द के भीतर ही निकरे यथा छप्पै कह गनपति पितु नाग देव अर्मिल का कहिये सज्जन को का कहत कौन हिय आनंद रहिये कौन चरित सुख देइ कहां ते सरयू आई छंद बद्ध को करत राम यश भावा गाई यामो यह चौपाई निकसतु है शंभु प्रसाद सुमति हिय हुलसी रामचरितमानस कवि तुलसी इति इति अंतरलापिका अथ बहिर्लापिका जो अर्थ बाहर ते आवै यथा कह्यौ नाम विपरीत कै जामें भयो प्रसिद्ध जो यनादि सम है गयो जान लेहु करि सिद्ध या मों यह चौपाई उलटा नाम जपत जग जाना बालमीकि भये ब्रह्म समाना अथ चित्र अश्वगति चक्र नमामि भक्तवत्सलं कृपालु शील कोमलं भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं अथ सीप बंध अरुन पराग जलज भरि नीके शशिहिं भूष अहि लोभ अमी के ॥

न	मा	मि	शी	क्त	को	त्स	ल
भ	का	मि	नां	प	धा	ड	द
कृ	पा	लु	भ	ल	व	म	तं
अ	जा	मि	ते	स्व	दो	म	जं



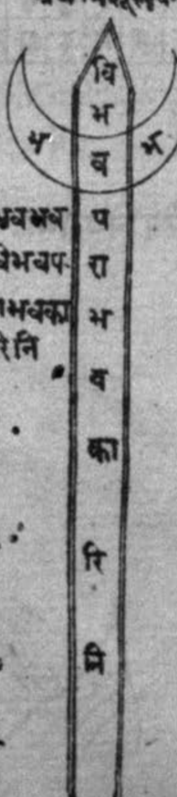
अथ नाल बंध



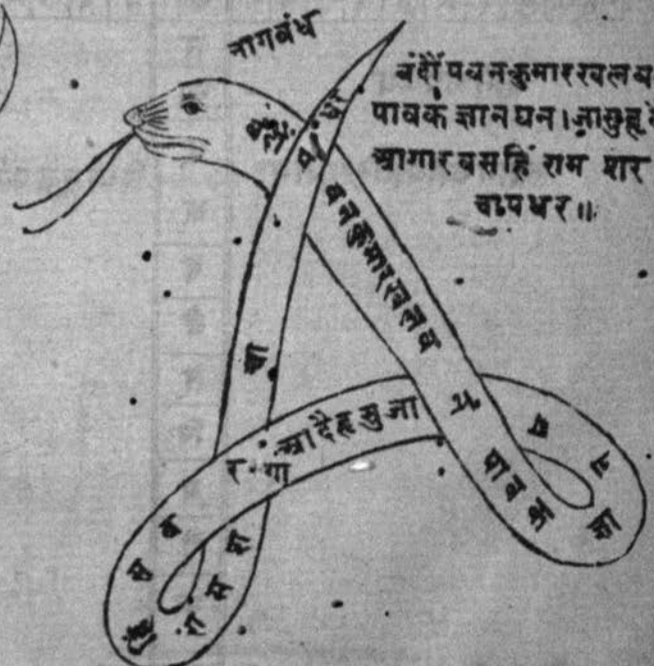


अथ त्रिशूलबन्ध

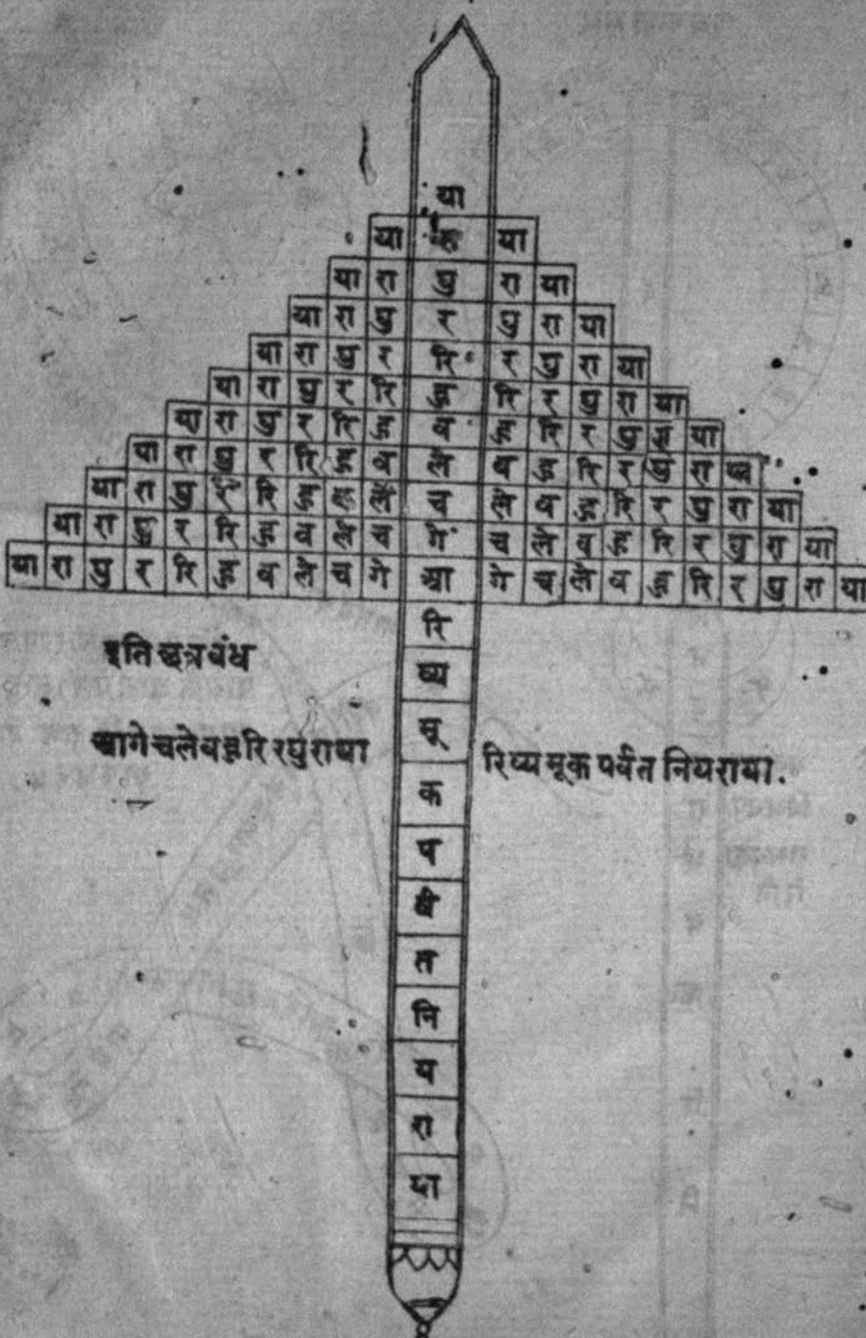
भवभव
विभवप
राभवका
रिनि



नागबंध



बंदौं पवनकुमार खलबन
पावक ज्ञान घन। जासु हृदै
आगार बसहिं राम सर
चापधर॥



इति छत्रबंध

आगे चले बहुरि रघुराया रिष्यमूक पर्वत नियराया.



इति किरीटबंध

भरतकमलकरजोरिधरमधुरन्धर धीरधरि वचनअमियजनुबोरिदेत.
उचितउत्तर सबहिं



जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार ॥
कीतुमअखिलभुवनपतिलीन्हमनुजअवतार।

इति मयूरबंध

इतिमानस दीपिकायां काव्य अंग वर्णन तृतीयो प्रकाशः ॥ ३ ॥

अब आगे पर्यायकी तरह हांसिये पर टीका लिखी जायगी ॥